नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 052
दि. 24.11.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

SIR के डर ने सीमाओं पर खड़ा किया नया संकट: हकीमपुर बॉर्डर पर बांग्लादेशियों की उमड़ी भीड़, दहशत में लौटने की चाह ने खींचा रिवर्स माइग्रेशन का अजीब पहर

(जीएनएस)। हकीमपुर बॉर्डर इन दिनों एक अनोखी और चिंताजनक तस्वीर पेश कर रहा है। सीमा के भारतीय हिस्से में अचानक भारी संख्या में बांग्लादेशी परिवार जमा हो रहे हैं—पुरुष, महिलाएं, छोटे बच्चे, बुज़ुर्ग, अपने बर्तनों, बैगों, कपड़ों और यहां तक कि बकरियों और घरेलू सामान के साथ। वे बीएसएफ जवानों से हाथ जोड़कर एक ही बात कह रहे हैं—"हमें वापस भेज दीजिए हमें बांग्लादेश लौटना है।" यह भीड़ किसी त्योहार की नहीं, बल्कि डर, दहशत और अनिश्चित भविष्य की है। डर है SIR प्रक्रिया का, जिसे शुरू होते ही सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले हजारों अवैध प्रवासियों की नींद उड़ गई है।

SIR—Special Intensive Revision—एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पुराने दस्तावेजों की गहरी जांच की जा रही है। जिनके पास आधार, राशन कार्ड या वोटर आईडी जैसे दस्तावेज हैं, लेकिन पुराने रिकॉर्ड में उनका कोई नाम या पहचान नहीं है, उन सब पर भय का साया फैल गया है। इन्हीं दस्तावेजों को सहारे बनाकर वे वर्षों से शहरों, कृषि क्षेत्रों और औद्योगिक इलाकों में मजदूरी या छोटे-मोटे व्यवसाय करते आए थे। अब जब SIR के दौरान मूल रिकॉर्ड मिलान हो रहा है, तो उन्हें लगने लगा है कि कहीं पकड़कर हिरासत में न लिया जाए। इस डर ने हजारों लोगों को मजबूर कर दिया कि वे अपने सामान के साथ बॉर्डर पर पहुंच जाएं और बांग्लादेश वापसी की राह तलाशें।

हकीमपुर क्षेत्र का इतिहास भी इस हालात को और गहराई से समझाता है। स्वरूपनगर और उसके आसपास का इलाका लंबे समय से तस्करी, गैर-कानूनी घुसपैठ और सीमा पार अपराधों का केंद्र माना जाता रहा है। 1971 के

युद्ध के समय यहां भारी संख्या में शरणार्थी आए थे और वर्षों तक दोनों ओर पलायन की घटनाएं होती रही थीं। समय बदला, लेकिन सीमाओं पर संवेदनशीलता नहीं बदली। हाल के दिनों में दिल्ली, कर्नाटक, महाराष्ट्र और बंगाल के कई इलाकों में गिरफ्तारियों ने अवैध प्रवासियों के नेटवर्क को हिलाकर रख दिया। उसी के बाद यह रिवर्स माइग्रेशन तेज़ हुआ और अब हालत यह है कि हकीमपुर की गलियों और खेतों में छोटे-छोटे समूहों में परिवार कतार बनाकर बीएसएफ चौकियों तक पहुंच रहे हैं। बीएसएफ के सामने यह अचानक उभरी भीड़ कई तरह की चुनौतियां खड़ी कर रही है। रोज़ाना 150 से 200 लोगों को हिरासत में लेकर उनके बायोमेट्रिक डेटा, फिंगरप्रिंट, पुराने दस्तावेज और रहने के ठिकानों की जानकारी की जांच की जा रही है। जो वाकई अवैध रूप से घुसे हुए पाए जाते हैं, उन्हें शांति से बांग्लादेश भेजने की प्रक्रिया शुरू की जाती है। कई लोगों ने पूछताछ में यह मान भी लिया है कि वे बिचौलियों को 10 से 30 हज़ार रुपये तक देकर सीमा पार आए थे और फर्जी दस्तावेज बनवाकर कई राज्यों में वर्षों से रह रहे थे।

कोलकाता, न्यूटाउन, बिराटी, धुलागोरी, हावड़ा के औद्योगिक परिसर और दक्षिण बंगाल के कस्बों में रहने वाले कई परिवार अब अचानक मजदूरी छोड़, घर-बार समेटकर सीमा पर पहुंच रहे हैं। उन्हें लगता है कि पहचान खुलते ही गिरफ्तारी तय है, इसलिए घर लौट जाना ही बेहतर है। इसी कारण यह दृश्य रिवर्स माइग्रेशन जैसा लग रहा है, लेकिन कुछ स्थानीय लोग इसे पुशबैक भी मानते हैं—एक ऐसी स्थिति जहां अवैध प्रवासी खुद ही भय के कारण भारत छोड़कर जाने की कोशिश कर रहे हैं।

हकीमपुर बॉर्डर की यह स्थिति न सिर्फ सुरक्षा बलों के लिए चुनौती है, बल्कि सीमा पर बसे गांवों की रोजमर्रा की शांति और कारोबार पर भी असर डाल रही है। हर दिन बढ़ती भीड़, उनकी दहशत भरी आंखें, बच्चों की असहजता, महिलाओं की चिंताएं—यह सब मिलकर एक ऐसा दृश्य बना रहे हैं जो सीमाओं की जटिलता को नए सिरे से सामने रखता है। SIR के नाम से शुरू हुई एक प्रशासनिक प्रक्रिया अब सामाजिक, राजनीतिक और मानवाधिकारों की बड़ी बहस को जन्म दे रही है।

हकीमपुर का यह दृश्य बता रहा है कि जब पहचान, दस्तावेज और वैधानिकता जैसे मुद्दे कठोर जांच के दायरे में आते हैं, तो उनके पीछे छिपी लाखों जिंदगियों की कहानी कैसे अचानक बदल जाती है। सीमा के इस कोने में खड़े ये लोग सिर्फ अवैध प्रवासी नहीं, बल्कि डर, असुरक्षा और अनिश्चितता में डूबी जिंदगियों का प्रतीक हैं—जो अपने भविष्य का रास्ता तय करने के लिए देश की सीमा पर टकटकी लगाए खड़े हैं।

"रेगिस्तान के आसमान में उठी धधकती लपटों के बीच, रूसी लड़ाकू विमानों का अंतिम सलाम भारत के शहीद पायलट नमांश स्याल को दुनिया ने झुककर किया नमन"

(जीएनएस)। दुबई के सुनहरे रेगिस्तान पर सूर्यास्त अपनी लालिमा बिखेर रहा था, हवा में उड़ती रेत के कण जैसे किसी मौन शोक में थमे हुए थे, और तभी आसमान की ऊँचाई में कई गर्जनाओं की आवाज गूंजी। ये साधारण उड़ानें नहीं थीं—यह Russian Knights की विश्व प्रसिद्ध एरोबेटिक टीम थी, जिनके Su-35 लड़ाकू विमान उस वीर भारतीय पायलट को अंतिम सलाम देने निकले थे, जिसकी आख़िरी उड़ान दुबई एयर शो 2025 के मंच पर ही समाप्त हो गई थी।

विंग कमांडर नमांश स्याल—एक ऐसा नाम जो अब सिर्फ भारतीय वायुसेना का हिस्सा नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय सैन्य बिरादरी की भावनाओं में भी अमिट रूप से दर्ज हो चुका है। रूसी पायलटों ने कहा कि उन्होंने यह प्रदर्शन उस "भाई" की याद में किया, जो कभी अपनी अंतिम उड़ान से वापस नहीं लौटा। सूरज की ढलती किरणों और आसमान में उकेरी गई एरोबेटिक आकृतियों ने उस क्षण को एक अनंत श्रद्धांजलि में बदल दिया।

नमांश का शरीर जब दुबई से C-130 विमान में भारत लाया गया, उस दौरान विमान के अंदर की खामोशी में सिर्फ एक ही एहसास था—कर्तव्य निभाते हुए शहीद हुए उस योद्धा की निस्वार्थ

वीरता। भारतीय वायुसेना ने एयरबेस पर पूरे औपचारिक सैन्य सम्मान के साथ उन्हें विदाई दी। सफ़ेद दस्तानों वाले एयरफोर्स कर्मियों ने तिरंगे में लिपटे ताबूत के सामने झुककर सलामी दी, और हवा बड़ी देर तक स्थिर रही, मानो प्रकृति भी उस साहस को नमन कर रही हो।

दुबई में भी यूएई सेना ने उन्हें समान सम्मान दिया। भारतीय दूतावास, यूएई अधिकारी, इंडियन एयरफोर्स के वरिष्ठ अधिकारी—सभी उस समारोह में मौजूद थे जहाँ भावनाएँ होंठों पर नहीं, आंखों की नमी में बसी थीं। भारतीय वायुसेना ने सोशल मीडिया पर नमांश को "अटूट अनुशासन और असाधारण कौशल वाले पेशेवर" बताते हुए लिखा कि उनके जीवन की प्रतिबद्धता ने उन्हें ऐसा गौरव दिलाया जिसकी झलक अंतिम विदाई के हर क्षण में दिखाई दी।

इसके बाद विशेष विमान से उनका शरीर हिमाचल के कांगड़ा हवाई अड्डे पर लाया गया। वहाँ उनकी पत्नी, छोटी बेटी और माता–पिता के कदमों में वह पीड़ा थी जिसे कोई शब्द कभी व्यक्त नहीं कर सकता। तिरंगे में लिपटे ताबूत को देख उनकी माँ की आँखें रोती रहीं, पिता जगन नाथ स्याल ने हल्की कांपती आवाज़ में कहा—"देश ने एक बेहतरीन पायलट खो दिया और मैंने अपना जवान बेटा।"

नमांश स्याल के पैतृक गांव पटियालकड़ में जिस समय उनका अंतिम संस्कार हुआ, पूरा गांव एक मौन जनसागर बन चुका था। कोई उन्हें "गांव का गौरव" कहकर रो रहा था, कोई "देश का वीर बेटा" कहकर द्रवित था। सैनिक सम्मान के बीच जब उनकी चिताग्नि जली तो आसमान तक धुआँ उठा, मानो वह भी अंतिम बार उस युवा पायलट की कहानी को अपने साथ समेटकर ऊपर ले गया हो।

21 नवंबर को हुई तेजस विमान दुर्घटना ने परिवार को ही नहीं, पूरे देश को झकझोर दिया। जो पायलट अपनी तेज धार वाली उड़ान तकनीक और शांत दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध था, वह इस बार मौत से बचने का कोई रास्ता नहीं खोज पाया। उसकी अंतिम उड़ान भले धरती पर आकर रुकी, लेकिन उसके साहस और सेवा की गूंज अब आसमान की हर लहर में दर्ज रहेगी।

दुनिया कई बार अपने नायकों को देर से पहचानती है। पर नमांश स्याल को tributes देते रूसी लड़ाकू विमानों, यूएई सेना, भारतीय वायुसेना और हज़ारों लोगों ने यह साबित कर दिया कि वीरता की कोई सीमा नहीं होती—वह धर्म, देश, भाषा और सरहद से आगे निकलकर सिर्फ इंसानियत और सम्मान का प्रतीक बन जाती है।

नमांश भले इस दुनिया से विदा हो गए हों, पर उनका नाम अब उन आसमानों में दर्ज है जहाँ वीर पायलट मरते नहीं—वे सिर्फ अपनी आख़िरी उड़ान लेकर अनंत आकाश में विलीन हो जाते हैं।

राष्ट्रवादी चिंतन की धरोहर विदिशा ने फिर रचा विकास का नया इतिहास, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बोले-कृषि, उद्योग और जनकल्याण में प्रदेश का उभरता अग्रदूत

(जीएनएस)। भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को विदिशा जिले के गंजबासौदा पहुँचकर विकास कार्यों के लोकार्पण और भूमिपूजन समारोह को संबोधित किया, जहाँ उन्होंने विदिशा की ऐतिहासिक पहचान, सांस्कृतिक विरासत और राजनीतिक महत्त्व को एक गौरवपूर्ण स्वर में याद किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि विदिशा सदियों से राष्ट्रवादी विचारधारा का सशक्त केंद्र रहा है। यह वही पवित्र भूमि है जहाँ राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने जनसेवा का आदर्श स्थापित किया, जहाँ पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राजनीति को नई भाषा दी, और जहाँ सुषमा स्वराज ने सेवाभाव की मिसाल कायम की। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी यह कर्मभूमि आज न सिर्फ अपनी पहचान को बनाए हुए है बल्कि कृषि, उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में नए मानदंड स्थापित कर रही है। कार्यक्रम में उमड़ी जन भीड़ और जोश देखते ही बनता था। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार अन्नदाता, महिलाओं और युवाओं को केंद्र में रखकर योजनाएँ बना रही है। उन्होंने लाड़ली बहना योजना को बढ़ाकर 1500 रुपये प्रति माह किए जाने और नारी सशक्तिकरण योजना के जरिए

उद्योगों में कार्यरत महिलाओं को 5,000 रुपये तक प्रतिमाह सहायता देने का जिक्र किया और कहा कि यह समाज के उस वर्ग को मजबूती देने का प्रयास है जिसने हमेशा परिवार और समाज की नींव को संभाले रखा है। किसानों के लिए भावांतर योजना को और प्रभावी बनाने, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए नदी जोड़ो अभियान को गति देने और गेहूं खरीद के लिए 2600 रुपये प्रति क्विंटल की घोषणा को उन्होंने प्रदेश की अर्थव्यवस्था में अन्नदाताओं की भूमिका को सम्मान देने वाला बताया।

सभा के दौरान 150 करोड़ रुपये की लागत से तैयार 54 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन एक साथ किया गया, जिसने कार्यक्रम को और भी उल्लेखनीय बना दिया। जनता को समर्पित इन कार्यों में 32 करोड़ 42 लाख रुपये की लागत से तैयार 150 बिस्तरों वाला नया सिविल अस्पताल शामिल रहा, जो स्वास्थ्य सेवाओं को नई मजबूती देगा। इसके अलावा जमांधर नदी पर 4 करोड़ की लागत से बने पुल, 13 करोड़ 21 लाख रुपये की लागत से निर्मित सड़कें, नल–जल योजनाएँ और उप-स्वास्थ्य केंद्रों के नए भवन ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सुविधाओं का विस्तार करेंगे। इसी के साथ 85 करोड़ 84 लाख रुपये के 28 विकास कार्यों का भूमिपूजन भविष्य की आधारभूत संरचना के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

कार्यक्रम का उत्साह तब और बढ़ गया जब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का रोड शो के दौरान नागरिकों ने पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया। सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक संगठनों और स्थानीय जनता द्वारा किया गया यह गर्मजोशी भरा स्वागत एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर रहा था मानो पूरा शहर कोई पर्व मना रहा हो। मुख्यमंत्री ने जनता के इस स्नेह, समर्थन और सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यही ऊर्जा उन्हें विकास के प्रयासों को और तेज करने का संकल्प देती है। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश सरकार के मंत्री लखन पटेल, जनप्रतिनिधि और भारी संख्या में मौजूद नागरिकों ने अपने शहर और जिले के विकास की नई उपलब्धियों का साक्षी बनकर इसे ऐतिहासिक दिन की तरह महसूस किया। विदिशा, जो सदियों से विचार, संघर्ष और राष्ट्रसेवा का केंद्र रहा है, अब विकास, आर्थिक प्रगति और जनकल्याण की नई पहचान गढ़ने की ओर आगे बढ़ चुका है।

फरीदाबाद की मस्जिद से पांच किलो संदिग्ध पाउडर मिलने पर मचा हड़कंप, फॉरेंसिक जांच से जुड़े नए सवाल

(जीएनएस)। फरीदाबाद के डबुआ क्षेत्र में रविवार को पुलिस द्वारा चलाए गए विशेष तलाशी अभियान के दौरान त्यागी मार्केट स्थित एक मस्जिद से पांच किलो संदिग्ध सफेद पाउडर बरामद होने के बाद पूरे इलाके में अचानक सनसनी फैल गई। पुलिस टीम को मस्जिद के भीतर रखे एक कमरे में यह सामग्री कट्टे में भरी मिली, जिसके बाद परिसर को अस्थायी रूप से सुरक्षित घेरा बनाकर जांच शुरू की गई। बरामदगी के तुरंत बाद पुलिस ने पाउडर को कब्जे में लेकर उसे फॉरेंसिक साइंस लैब भेज दिया है और स्पष्ट किया है कि रिपोर्ट आने से पहले उसकी प्रकृति या उसके पीछे की मंशा पर कोई अनुमान लगाना अनुचित होगा। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से फैलने लगा, जिससे आसपास के क्षेत्रों में तरह-तरह की चर्चाएं और अफवाहें फैलने लगीं। पुलिस सूत्रों के अनुसार मस्जिद परिसर में जिस कमरे से पाउडर मिला, वह सामान्यतः बंद रहता था और उस पर ताला लगा हुआ था। तलाशी अभियान के दौरान कमरे खोले गए और अंदर मौजूद लॉकर्स, अलमारी और अन्य सामान की भी गहन जाँच की गई। प्राथमिक स्तर पर अधिकारियों ने सिर्फ इतना कहा कि पाउडर को देखकर यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल है कि यह कोई रासायनिक पदार्थ है, घरेलू सामग्री है या सिर्फ निर्माण में इस्तेमाल होने वाला सफेद सीमेंट हो सकता है। डबुआ थाना प्रभारी रणधीर सिंह ने कहा कि किसी भी प्रकार का निष्कर्ष निकालने का अधिकार केवल लैब की जांच रिपोर्ट को है और पुलिस अभी सिर्फ प्रक्रिया का पालन कर रही है। रविवार को पुलिस ने पूरे क्षेत्र में व्यापक स्तर पर एक कॉम्बिंग ऑपरेशन चलाया, जिसमें न केवल मस्जिदें बल्कि अन्य धार्मिक स्थल, साइबर कैफे, धर्मशालाएं, होटल, लॉज और गेस्ट हाउस भी शामिल किए गए। जांच के दौरान पुलिस ने किरायेदारों के सत्यापन दस्तावेजों का मिलान किया, सेकेंड हैंड वाहनों की खरीद-बिक्री से जुड़े कागजात खंगाले और संदिग्ध गतिविधियों पर निगरानी रखी। अभियान के दौरान दो शराब तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया, जिनसे पूछताछ जारी है। दिल्ली ब्लास्ट के बाद सुरक्षा एजेंसियां पहले ही सतर्क थीं, और इसी संदर्भ में स्थानीय पुलिस द्वारा गठित स्पेशल इन्क्वायरी टीम (SET) भी पूरे इलाके में सक्रिय है। रविवार को यह टीम अल-फलाह यूनिवर्सिटी और उसके आसपास के क्षेत्रों में पहुँची और कई लोगों से पूछताछ की। अब तक पुलिस लगभग दो हज़ार से अधिक किरायेदारों के दस्तावेजों, उनके परिचयकर्ताओं और सेकंड हैंड वाहनों के लेन-देन से जुड़े कागजातों की जांच कर चुकी है। अधिकारियों का कहना है कि फॉरेंसिक जांच रिपोर्ट ही इस पूरे प्रकरण की दिशा तय करेगी और उससे पूर्व किसी भी प्रकार की जल्दबाजी गलत निष्कर्षों को जन्म दे सकती है। फिलहाल इलाके में पुलिस की सतर्कता बनी हुई है और स्थानीय लोगों को भी अफवाहों से बचने की अपील की जा रही है।

"चुनाव में गड़बड़ी तो हुई, पर सबूत नहीं"—प्रशांत किशोर की कड़वी चुप्पी टूटी, बिहार के नतीजों को बताया जनता के मूड से बिल्कुल उलट, हार के बाद भी बोले–'कहानी खत्म नहीं हुई'

(जीएनएस)। नई दिल्ली का माहौल रविवार सुबह अचानक राजनीतिक गर्माहट से भर गया, जब बिहार विधानसभा चुनाव में जन सुराज की करारी हार के बाद प्रशांत किशोर ने पहली बार चुप्पी तोड़ी। एक रणनीतिकार से नेता बने PK का यह बयान बेहद साफ, लेकिन उतना ही गूढ़ भी था—"चुनाव में गड़बड़ी हुई है, पर मेरे पास ठोस सबूत नहीं है।" उन्होंने कहा कि जो नतीजे आए हैं, वे ज़मीनी हकीकत और जनभावना से बिल्कुल मेल नहीं खाते। जैसे किसी ने पूरे परिदृश्य को अचानक एक अलग रंग में रंग दिया हो।

किशोर की बातों में निराशा भी थी, हैरत भी और एक अजीब तरह का अविश्वास भी कि इतने लंबे समय तक की गई जन सुराज यात्रा, हजारों गांवों में मिले अपार समर्थन, महिलाओं–युवाओं–किसानों से मिले भरोसे का एक भी प्रतिबिंब नतीजों में क्यों नहीं दिखा। उन्होंने कहा कि महीनों के ग्राउंड फीडबैक में जो तस्वीर मिली, चुनाव नतीजे उससे "धार्मिक रूप से विपरीत" हैं। PK ने कई सीटों का हवाला देकर कहा कि कुछ जगहों पर उन दलों को लाखों वोट मिले जिन्हें संबंधित इलाके के लोग पहचानते तक नहीं थे। कुछ सीटों पर वोटों की हलचल इतनी अप्राकृतिक दिखी कि कई स्थानीय कार्यकर्ताओं ने खुद उनसे पूछ लिया—"सर, ये कैसे हो गया?"

PK का कहना था कि अगर सब कुछ सामान्य होता तो जन सुराज इतनी बुरी तरह नहीं हारती। वे यह मानने को तैयार नहीं कि इतनी विशाल यात्रा और उस दौरान मिली जन-भागीदारी का कोई असर ही न हुआ हो। फिर उन्होंने वही बात कही, जिसे लेकर बिहार में कानाफूसी पहले से चल रही थी—"लोग कह रहे हैं कि EVM में छेड़छाड़ हुई है मेरे पास सबूत नहीं हैं, लेकिन कई चीजें तार्किक नहीं लगतीं।"

सबसे बड़ा आरोप उन्होंने महिलाओं को नकद राशि देने पर लगाया। PK के अनुसार चुनाव से पहले और मतदान के दिनों तक हजारों महिलाओं को 10,000 रुपये नकद दिए गए, यह कहते हुए कि कुल 2 लाख रुपये मिलेंगे—एक किस्त अभी, बाकी सरकार बनने के बाद। उन्होंने कहा कि यह एक संगठित और योजनाबद्ध प्रक्रिया थी, जिसने मतदान से पहले वोटर्स का पूरा मानस बदल दिया। अंतिम चरण में जब महिलाओं और गरीब परिवारों को लगा कि जन सुराज जीत के करीब नहीं है, तब "जंगल राज का डर" फैलाया गया और वोट का बड़ा हिस्सा NDA की ओर मोड़ दिया गया।

PK जानते थे कि उनके इस बयान पर फिर वही लोग प्रहार करेंगे, जो कभी उनकी रणनीतियों की तारीफ़ कर चुके हैं। इसलिए उन्होंने हल्की मुस्कान के साथ कहा—"पहले तालियां बजाने वाले अब आलोचना कर रहे हैं अगर मैं सफल हुआ, तो यही लोग फिर तालियां बजाएंगे। कहानी अभी खत्म नहीं हुई है।"

बिहार की 243 सीटों में से 238 पर उम्मीदवार उतारने के बावजूद जन सुराज एक भी सीट नहीं जीत सकी, अधिकांश जगहों पर उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई और कुल वोट प्रतिशत 2 से 3 प्रतिशत के बीच सिमट गया। यह हार इतनी भारी थी कि कई राजनीतिक विश्लेषकों ने PK की राजनीतिक यात्रा को समाप्त मान लिया, पर वे खुद इसे अंत नहीं मानते। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ पहला अध्याय है—और यह लड़ाई नतीजों से बड़ी है, और लंबी भी।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

परिवार की गली में जब हँसी, चुप्पी, हार और आरोप सब एक साथ रहने लगें

परिवार कैसा होना चाहिए—यह प्रश्न जितनी बार पूछा जाता है, उतनी बार उसका कोई न कोई नया संस्करण सामने आ ही जाता है। तेजू भैया की दृष्टि से अगर देखो तो इतिहास के जयचंद तो हर युग में मौजूद ही रहते हैं; फर्क सिर्फ इतना होता है कि इस बार उनकी एंट्री टीवी के किसी महाकाव्य में नहीं, बल्कि राजनीति के उस स्टूडियो में होती है जहाँ हर माइक्रोफोन के नीचे एक कहानी, एक आरोप और एक उलझी हुई रिश्तेदारी बैठी रहती है। आज की राजनीति में परिवार वह नहीं जो एक ही खाने की थाली में रोटी बांट ले—परिवार वह होता है जहाँ यह तय करना पड़ता है कि कौन किसकी रोटी खा रहा है, और कौन किसकी थाली में नमक कम करके योजना बना रहा है। जब मीडिया यह कहता है कि अब वहाँ मंथराएँ भी आ चुकी हैं, तो लगता है कि हर बड़े घर में कहीं न कहीं अयोध्या की छाया फैली हुई है, जहाँ मसले केवल सिंहासन के नहीं होते—मसले उस पर बैठने के तरीकों के होते हैं।

आस्तीन में सांप हों या होंठों पर मुस्कान—परिवार में दोनों एक साथ रह सकते हैं, क्योंकि राजनीति में रिश्तेदारियाँ अक्सर फर्श पर गिरा पानी होती हैं—जिसे कोई भी, किसी भी वक्त, अपने पैरों से मोड़ सकता है। लोग कहते हैं परिवार संघ परिवार जैसा हो तो अच्छा है; जहाँ कोई गिरने लगे तो दूसरा संभाल ले। पर यह बात भी उतनी ही दिलचस्प है कि जब संघ परिवार को किसी की जीत का श्रेय दिया जाता है, तो वह अपनी विनम्रता में इतना धनी है कि वह श्रेय तुरंत दूसरे के सिर पर रख देता है। यह ऐसा ही है जैसे एक घर में कोई मेहमान कह दे कि "आपका खाना बहुत अच्छा है" और घरवाले जवाब में कहें कि "नहीं-नहीं, हमारी तो बहू ने बनाया है।" राजनीति में भी विनम्रता एक तरह का हथियार है—पहले सामने वाले को धन्यवाद देना, फिर उसके ही धन्यवाद को अपने महत्व का प्रमाण बनाना।

पर परिवार का दूसरा चेहरा भी है—जिसे लोग लालू परिवार के हालिया घटनाक्रम में देख रहे हैं। जहाँ जीत के समय सब रिश्तेदार होते हैं, और हार के समय सबको अचानक अपने-अपने रास्ते याद आने लगते हैं। जब रोहिणी आचार्य जैसी बेटी यह कह देती है कि वह स्वयं को अनाथ मानती है, तब लगता है कि परिवार की दीवारें सिर्फ खून से नहीं टिकतीं—वे टिकती हैं उन उम्मीदों से जो टूट जाएँ, तो कोई भी दरार भरना मुश्किल हो जाए। राजनीतिक घरानों में हार सिर्फ हार नहीं होती, वह एक दर्पण भी होती है—जिसमें हर सदस्य अपना चेहरा देखता है और उसे लगता है किसी और का पहला दोष दिख जाए, तो खुद को थोड़ी राहत मिल जाएगी।

तेजू भैया इस पूरे तमाशे में वैसे ही खड़े रहते हैं जैसे बस्ती की चाय की दुकान के सामने खड़े लोग, जिन्हें हर घटना में मज़ा आता है। वे दावा करते हैं कि जयचंद पहले से था, बस मीडिया ने नए जमाने की मंथराओं का पता लगा लिया। और जब वे कहते हैं कि कहीं आस्तीन में सांप पल रहे हैं, तब लगता है कि यह सारा परिवार किसी पुराने महल की तरह हो गया है—जहाँ खिड़कियों के पीछे कहानियाँ हैं, कमरों के अंदर अफवाहें हैं, और दीवारों की दरारों में छिपे हुए आरोप, जो वक्त आने पर बाहर सरक आते हैं।

कभी-कभी तो लगता है कि राजनीति का परिवार वह जगह है जहाँ जितने सदस्य हों, उतने ही अलग-अलग मौसम रहते हों। एक कमरे में गुस्सा, दूसरे में हँसी, तीसरे में मनमुटाव और चौथे में उम्मीद का एक छोटा-सा दिया। और जैसे साइंस कहता है कि ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती, उसी तरह राजनीतिक ऊर्जा भी कहीं न कहीं बनी रहती है—कभी बहस के रूप में, कभी पोस्टर के रूप में, कभी ट्वीट में और कभी किसी साले-मामा की अचानक हुई वापसी में। हार अनाथ होती है, यह बात दुनिया भर के समाजशास्त्री कहते आए हैं, पर राजनीति ने यह भी दिखा दिया है कि हार इतनी अनाथ नहीं कि उसे कोई गोद में न उठा ले। हार जैसे ही आती है, खोए हुए रिश्तेदारों की परेड शुरू हो जाती है—जो बरसों पहले गुम थे, वे फिर दिखाई देने लगते हैं, जैसे उस झिलमिलाती रोशनी की ओर कीड़े उड़ते चले जाते हैं।

भ्रष्टाचार और जंगलराज से समझौता बना कांग्रेस की हार

> कांग्रेस ने लालू राज की इस सच्चाई को जानने के बावजूद राजनीतिक पैतरेबाजी से बिहार में सत्ता हासिल करने का नाकाम प्रयास किया। बिहार में वोट चोरी का अभियान चलाया गया। यह कभी चुनावी मुद्दा नहीं रहा। एसआईआर प्रक्रिया में 65 लाख वोट हटा दिए गए। यह मुद्दा सुप्रीम कोर्ट तक गया।

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की विशेष अदालत ने पिछले महीने आईआरसीटीसी होटल घोटाला मामले में 14 आरोपियों के खिलाफ आरोप तय किए। सीबीआई के अनुसार, राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी राबड़ी देवी और बेटे तेजस्वी प्रसाद यादव के अलावा राज्यसभा सदस्य प्रेमचंद गुप्ता, उनकी पत्नी सरला गुप्ता, आईआरसीटीसी अधिकारियों, कोचर ब्रदर्स समेत कुल 14 आरोपियों के खिलाफ आरोप तय कर दिए गए थे। यह खबर पूरे देश में पढ़ी—सुनी गई। यदि किसी ने नहीं देखी तो वह है कांग्रेस पार्टी ने। कांग्रेस ने लालू यादव के भ्रष्टाचार और जंगलराज के अन्य मामलों की तरह इसे भी नजरांदाज कर दिया। कांग्रेस यह भूल गई कि यदि ऐसे मामलों की अनदेखी की गई तो मतदाता भी उसे भूल जाएंगे। बिहार विधानसभा चुनाव में यही हुआ। मतदाता भूल गए कि कांग्रेस भी एक राष्ट्रीय और प्रमुख विपक्षी राजनीतिक दल है। कांग्रेस ने सत्ता के लिए भ्रष्टाचार से समझौता किया। मतदाताओं ने कांग्रेस के इस रवैये को मतों से ठुकरा दिया। सर्वाधिक आश्चर्य की बात यह है कि कांग्रेस ने पिछली गलतियों से जरा भी सबक नहीं सीखा। भ्रष्टाचार और कानून—व्यवस्था आज भी देश में प्रमुख मुद्दा है। विकास और दूसरे मुद्दे इसकी नींव पर खड़े होते हैं, यदि नींव ही कमजोर होगी तो विकास की इबारत नहीं लिख पाएगी। कांग्रेस ने बिहार में लालू यादव की पार्टी से सत्ता के लिए समझौता कर अपने पैरों पर फिर से कुल्हाड़ी मारने का काम किया है। कांग्रेस को बिहार विधानसभा की कुल 243 सीटों में से मात्र 6 सीटें मिली। इस शर्मनाक हार की जिम्मेदार खुद कांग्रेस है। कांग्रेस अब इस जिम्मेदारी से भागने के लिए फिर से वही पुराना वोट चोरी, सरकारी मशीनरी के चुनाव में दुरुपयोग का आरोप लगा रही है। अभी भी कांग्रेस इस सच्चाई का सामना करने को तैयार नहीं है कि उसने एक महाभ्रष्ट लालू यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल से सीटों का समझौता करके भारी भूल की है। बिहार के मतदाताओं ने इन दोनों दलों को तगड़ा सबक सिखाया है।

कांग्रेस ने आकंठ तक भ्रष्टाचार में डूबे लालू परिवार के जरिए चुनावी वैतरणी पार करने का गलत निर्णय लिया। यह जानते हुए भी कि मतदाता इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। अपराधी परिवार के साथ चुनावी तालमेल की कीमत कांग्रेस को चुकानी पड़ गई। भाजपा और मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने लालू यादव के कार्यकाल के दौरान भ्रष्टाचार और जंगलराज को प्रमुख मुद्दा बनाया। कांग्रेस इसके बचाव में कोई दलील देकर मतदाताओं को संतुष्ट नहीं कर सकी। बिहार में चुनाव हो और चारा घोटाले से जुड़ी कहानियां सामने न आए, ऐसा हो ही नहीं सकता। ये घोटाला ही ऐसा था कि 30 साल बाद भी लोग इसके बारे में बात करते हैं और जानने की चाहत रखते हैं। कांग्रेस ने 950 करोड़ रुपये के घोटाले में अपने प्रमुख सहयोगी और राजद प्रमुख लालू प्रसाद को गिरफ्तारी से बचाने के लिए पर्दे के पीछे से राजनीतिक चालें चलीं, लेकिन वे असफल रहीं। वर्ष 1990-96 के दौरान सामने आया चारा घोटाला बिहार पशुपालन विभाग में हुआ। इसमें अधिकारियों ने बेईमान सप्लायर्स के साथ मिलकर फर्जी बिलों के आधार पर सैकड़ों करोड़ रुपये का गबन किया। जांच में तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, नौकरशाहों और राजनेताओं की संलिप्तता सामने आई। ये सरकारी खजाने की बड़ी लूट थी।

यह घोटाला मुख्य रूप से 1990 के दशक में हुआ। इस समय लालू प्रसाद यादव बिहार के मुख्यमंत्री थे। इसका खुलासा 1996 में तब हुआ, जब चाईबासा (अब झारखंड में) के उपायुक्त अमित खरे ने पशुपालन विभाग के दफ्तरों पर छापा मारा और फर्जी बिलों के जरिए धन निकासी की गड़बड़ी पकड़ी। बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू यादव को पांच मामलों में दोषी ठहराया गया। लालू प्रसाद यादव पशुपालन घोटाले के मामलों में लालू अब तक कुल सात बार जेल जा चुके हैं। चाईबासा ट्रेजरी से अवैध निकासी के मामले में 3 अक्टूबर 2013 को पहली बार उन्हें सजा मिली थी। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्रा, जगदीश शर्मा, आर.के. राणा जैसे नेताओं और अफसरों को भी इस मामले में सजा सुनाई गई।

भ्रष्टाचार के ऐसे ढेरों मामलों के अलावा कांग्रेस लालू यादव के शासन के दौरान जंगल राज को भूल गई। लालू राज के दौरान अपराध की घटनाओं में वृद्धि हुई। अपहरण (किडनैपिंग) की वारदातें बढ़ीं। सड़क पर बढ़ती असुरक्षा भी इसमें शामिल थी।गुंडागर्दी और बाहुबल का प्रभाव थी। कई जगह दबंगों और बाहुबली नेताओं का वर्चस्व था। प्रशासन पर राजनीतिक हस्तक्षेप के आरोप लगे थे। अर्थव्यवस्था और विकास में गिरावट आंकी गई थी। उद्योग, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे की स्थिति कमजोर हुई थी। बिहार को देश के "सबसे पिछड़े राज्यों" में गिना जाने लगा था। वर्ष 1992 से 2004 तक, अपहरण के कुल 32,085 मामले दर्ज किए गए थे। ऐसे कितने मामले दर्ज नहीं किए गए। बिहार पुलिस की वेबसाइट के अनुसार, 2001-2005 के बीच हत्याओं की संख्या 20,000 के करीब है। 90 के दशक में स्थिति का सिर्फ़ अंदाज़ा ही लगाया जा सकता है।

बिहार में दूसरा जंगलराज चुनावों में होने वाली हिंसा, बूथ कैप्चरिंग और धांधली से जुड़ा था, जिसका अंत भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने अपने कड़े चुनाव सुधारों से किया था। टी.एन. शेषन भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त 1990–1996 तक थे, तब उन्होंने इस सिस्टम को बदलने के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए थे। बिहार में इन सुधारों का प्रभाव सबसे ज्यादा दिखा। इस दूसरे वाले जंगलराज में बदमाशों या राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा पूरे बूथ पर कब्ज़ा करना, वोटिंग मशीन/बैलेट पेटी उठा ले जाना या खुद वोट डाल देना,वोटरों को धमकाना या बूथ से भगा देना जैसी चीज़ें शामिल थी। चुनाव के दौरान हत्या और गोलीबारी आम थी। पुलिस पर भी हमले होते थे। कई जिलों में स्थानीय प्रशासन चुनाव के दौरान निष्पक्ष भूमिका नहीं निभा पाता था। बाहुबलियों का सीधा प्रभाव चुनाव प्रक्रिया में दिखता था। शेषन ने पहली बार बूथों पर केंद्रीय अर्द्धसैनिक बल तैनात किए गए, जिससे राज्य पुलिस पर निर्भरता कम कर दी गई।

कांग्रेस ने लालू राज की इस सच्चाई को जानने के बावजूद राजनीतिक पैतरेबाजी से बिहार में सत्ता हासिल करने का नाकाम प्रयास किया। बिहार में वोट चोरी का अभियान चलाया गया। यह कभी चुनावी मुद्दा नहीं रहा। एसआईआर प्रक्रिया में 65 लाख वोट हटा दिए गए। यह मुदृदा सुप्रीम कोर्ट तक गया। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर प्रतिबंध लगाने से इंकार कर दिया। इस मुदृदे का दम तब निकल गया जब एसआईआर की प्रक्रिया के दौरान किसी भी पार्टी के एजेंट ने नाम हटाने पर ऐतराज तक नहीं किया। इससे जाहिर है कि कांग्रेस ने इसे सिर्फ हवाई मुदृदा बनाया। बिहार चुनाव में कांग्रेस के पास ऐसा कोई मुदृदा नहीं था, जिस पर मतदाताओं की मोहर लगवाई जा सके। कांग्रेस भ्रष्टाचार के खिलाफ एक भी नजीर पेश नहीं कर सकी। कांग्रेस यदि गंभीर होती तो अपने शासित राज्यों में किसी एक का उदाहरण देकर मतदाताओं को विश्वास दिला सकती थी, कि वह भ्रष्टाचार पर जीरो टोलरेंस की नीति पर अमल करती है। कांग्रेस को यह समझना होगा कि राजद जैसे दागदार क्षेत्रीय दलों की तुलना वह एक प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी है। सिर्फ एक राज्य में सत्ता के लिए भ्रष्टाचार जैसे मुदृदों से समझौता करने की भारी कीमत पूरे देश में चुकानी पड़ सकती है। यही कीमत दूसरे राज्यों के अलावा अब कांग्रेस ने बिहार में चुकाई है।

प्रेरणा

एक ऐसी हंसी, जो घर भर में गूंजती तो थी, पर किसी को सुनाई नहीं देती

पहली बार जब मैंने उसे देखा था, वह खुले आँगन में बड़े आत्मीयतापूर्वक हंस रहा था। वह इतनी सहजता से, बिना किसी संकोच के, बिना किसी कारण के बस हंस देता था कि मुझे यह समझ ही नहीं आता था कि आखिर वह ऐसा क्यों करता है। जैसे उसे किसी भी सामान्य बात में इतनी खुशी मिल जाती हो, जितनी आम तौर पर किसी को किसी बड़े अवसर पर भी न मिले। मुझे लगा कि शायद गांव के इस विरान-से माहौल में हम शहर से आए बारह लोगों को देखकर वह खुश हुआ होगा, पर सच कहूं तो बिना वजह हंसते आदमी को देखकर मेरे भीतर हमेशा एक अजीब-सी कसमसाहट पैदा हो जाती है—जैसे उसकी हंसी में कुछ है जो मैं पकड़ नहीं पा रहा हूँ।

उसकी नाक कुछ ऐसे उठ जाती थी जैसे बड़ा मोटा पकौड़ा तवा छोड़कर फूला हुआ बैठ जाए। होंठ खिंचते हुए दोनों ओर लंबी सिलवटें बना देते। और वह हंसी तब और भी अजीब लगती, जब मैं यह देखता कि वह हम सबके साथ ही खाना खाता है और फिर अचानक उठकर दूसरों की जूठी थालियाँ उठाने लगता है। मैंने उसको अपनी थाली उठाते देखा तो मैं चौंक पड़ा। मेरी तो आदत ही नहीं कि कोई अनजान इंसान, जो अभी थोड़ी देर पहले मेरे साथ बैठकर खाना खा रहा था, वो मेरी जूठी थाली उठाए। लेकिन उस आदमी ने जैसे जिद ठान रखी थी कि यह उसका अधिकार है। मैं जब उसे रोकने की कोशिश करता, वह और ज्यादा हंसने लगता, जैसे मेरी हिचकिचाहट उसे और मजेदार लग रही हो। और जब मैं थाली छोड़ देता, वह जीतने की खुशी में नहीं, बस उसी अपने अजीब संतोष में मुस्कुराते हुए चला जाता।

घर में बाकी लोग उसके इस व्यवहार को बिलकुल सामान्य मानते थे। किसी के चेहरे पर कोई झुंझलाहट नहीं, कोई आश्चर्य नहीं—कुछ भी नहीं। जैसे वह इस घर का हिस्सा तो है, पर इतना भी नहीं कि उसकी उपस्थिति पर गौर किया जाए। वह चलता-फिरता, छूटे-छूटे काम निपटाता, मुस्कुराता, और जब कोई उसे कुछ कहता, वह हंसकर मान जाता, जैसे उसे आदेश नहीं, किसी दोस्ताना मज़ाक में कुछ कहा गया हो।

रात को जब हम छत पर बातों में खोए होते, नीचे से उसका ठहाका आता—एक ऐसा ठहाका जो किसी को परेशान नहीं करता था। कमरे में उसका बिस्तर नत्थू बाबू के बिल्कुल बगल में लगा था, फिर भी रिश्तेदारी जैसी निकटता कहीं दिखती नहीं थी। मैं समझ नहीं पाता था कि यह आदमी आखिर है कौन? नौकर नहीं हो सकता—क्योंकि नौकर जैसा दूरीभरा व्यवहार किसी में नहीं दिखता। रिश्तेदार होता तो फिर इतनी बेइज्जती, इतने आदेश, इतने काम और यह सारी चीज़ें वह खुशी से करता रहा, जैसे उसके जीवन का उद्देश्य ही सबकी मदद करना हो।

सुबह-सुबह जब सब सो रहे थे, वह कड़कती ठंड में कुएँ से पानी भरकर लाता रहा। नाश्ते में वह बार-बार पूछता—लो न, और लो—और जब किसी ने कठोरता से मना कर दिया, तब भी उसकी हंसी में कोई दरार नहीं आई। बल्कि वह और भी खुलकर हंस पड़ा, जैसे उसे अपनी अवहेलना भी मजाक लगती हो। मुझे अपने मित्र की उस रुखाई पर गुस्सा आया, पर उसकी हंसी में इतनी बेफिक्री, इतनी मासूमियत थी कि मैं भी हंस पड़ा। और मेरी इसी हंसी ने मेरे मित्र को खीज से भर दिया।

मैंने देखा कि नत्थू बाबू और उनकी भैंस जैसी विशालकाय पत्नी, दोनों ही उससे बिल्कुल साधारण ढंग से व्यवहार करते थे—न नज़दीकी, न दूरी। जैसे वह घर का कोई हिस्सा हो भी, और न हो भी। बहू का चेहरा हमेशा भावहीन रहता—वह सुन्दर थी, और शायद अपनी सुंदरता के अहसास में कुछ डूबी हुई भी। शायद थकती होगी, शायद परेशान रहती होगी, शायद अनमेल विवाह और घर की जिम्मेदारियों ने उसके चेहरे से भाव चुरा लिए होंगे। एक दिन मैंने देखा कि उसने उस आदमी से कुछ कहा, या शायद वह उससे कुछ पूछने गया था—पर बहू ने ऐसे चलते हुए जवाब दिया जैसे हवा की कोई आवाज हो, जिसे सुना जा सकता है, पर सुना नहीं जाता। फिर भी वह उसी तरह हंसकर आगे बढ़ गया।

मुझे भीतर ही भीतर यह जानने की बेचैनी होने लगी कि यह आदमी आखिर कौन है। जिस संवेदनशीलता से वह काम करता है, जिस अपनापन से वह रहती हुई दुनिया को देखता है, उससे तो लगता था कि वह परिवार का कोई गहरा हिस्सा होगा; पर जिस तरह उससे व्यवहार किया जाता है, उससे लगता था कि वह किसी भी रिश्ते के बाहर खड़ा कोई व्यक्ति है, जिसे घर ने अपनाया तो जरूर है, पर स्वीकार कभी नहीं किया।

मैं पूछ भी नहीं सकता था—घरेलू बातों में टांग अड़ाना ठीक नहीं लगता। ऊपर से हम लोग तो वैसे भी बोझ बनकर गए थे। लोग हमें इसलिए सहन कर रहे थे क्योंकि एक व्यक्ति उनका रिश्तेदार था। ऐसे में मैं उस रहस्य को भीतर ही भीतर लिए घूमता रहता।

जब हम लौटने लगे और सामान कार में रखा जा रहा था, वह दौड़ता-हांफता आया। उसने हमारा बहुत काम किया था, बिना रुके, बिना थके, बिना कभी शिकायत किए। बच्चे उसे अनदेखा करते रहे, फिर भी वह उन्हें देखकर हंस रहा था। मुझे उसकी हंसी अब एक पहेली लगती थी—अधूरी, अनकही, कहीं गहरी, कहीं टूटी हुई।

और तभी पहली बार मैंने देखा—उसकी आँखें भर आई थीं। नहीं—रो नहीं रहा था। बस जैसे कोई पुरानी नमकीन परत होंठों के कोने में अटक गई हो। पर उसकी हंसी गायब थी।

मैंने अपने साथी से पूछा कि वह कौन है। वह हंस पड़ा। बोला—"कौन, वो पगला? दूर का रिश्तेदार है—मुफ्त का नौकर समझ लो।" मैंने आश्चर्य से पूछा, "पगला? वह तो मुझे बिल्कुल सामान्य लगा।" इस पर वह जोर से हंस पड़ा—"आप भी तो उसके जैसे ही हो, इसलिए वह आपको नॉर्मल लगा।"

फिर उसने बताया—उसकी बीवी बहुत खूबसूरत थी। किसी के साथ भाग गई। तब से यह हंसता रहता है। जैसे किसी ने उसके भीतर का दर्द सुखाकर राख कर दिया हो, और राख बची रह गई हो—हल्की, उड़ती हुई, हर हवा में फिसलकर मुस्कुराती।

कार आगे बढ़ी तो मैंने आखिरी बार पीछे मुड़कर देखा। वह वहीं खड़ा था—पर हंस नहीं रहा था। बस चुप, खोया, जैसे भीतर की कोई ध्वनि पहली बार बाहर उतर आई हो।

और मेरी आँखों में बस वही छवि रह गई—एक ऐसी हंसी जो दुनिया को रौशन करती थी, पर खुद के लिए कभी उजाला न बन सकी।

एआई से मुकाबले के लिए जरूरी मानवीय क्षमताएं

आज हम ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन, कामकाज और सोचने के तरीके को बदल रही है। एआई आज हर क्षेत्र—शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बैंकिंग, उद्योग, मीडिया—में अपनी पैठ बना चुकी है। जहां एक ओर यह तकनीक कार्यक्षमता बढ़ा रही है, वहीं दूसरी ओर यह चिंता भी बढ़ा रही है कि भविष्य में क्या मनुष्य के रोजगार छिन जाएंगे?

यह सवाल बेहद प्रासंगिक है। क्या इंसान एआई से मुकाबला कर पाएगा? जवाब है—हां, बिल्कुल कर सकता है। लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि हम ऐसी क्षमताएं विकसित करें जिनकी बराबरी एआई कभी नहीं कर सके।

एआई तेज़ी से डेटा को प्रोसेस कर सकता है, पैटर्न पहचान सकता है, और जटिल निर्णय भी ले सकता है। लेकिन यह एक सच्चाई है कि एआई में मानवीय भावनाएं, नैतिकता, रचनात्मकता और सहानुभूति नहीं होती। एआई 'सोचता' नहीं, बल्कि 'सीखाए गए पैटर्न' पर काम करता है। यह वही कर सकता है जो उसे सिखाया गया है; नई परिस्थितियों में मानवीय समझ या संवेदनशीलता नहीं दिखा सकता। इसलिए, भविष्य उन्हीं लोगों का होगा जो अपनी मानवीय क्षमताओं को निखारेंगे और तकनीक को अपना सहयोगी बनाएंगे, प्रतिस्पर्धी नहीं। एआई से आगे रहने के लिए विकसित की जाने वाली मुख्य क्षमताएं मानवीय पूंजी है। एआई के पास भावनाएं नहीं हैं, लेकिन इंसानों के पास यह सबसे बड़ी ताकत है। नेतृत्व, टीम वर्क, ग्राहक सेवा, या लोगों के साथ जुड़ने की क्षमता—ये सब भावनात्मक समझ से ही संभव हैं। अपनी सहानुभूति, संवाद शैली और दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता को बढ़ाएं। भविष्य में जो व्यक्ति 'लोगों को समझना' जानता है, वही 'मशीनों को चलाना' भी बेहतर कर पाएगा।

रचनात्मक सोच वह क्षेत्र है जहां एआई अभी भी पीछे है। एआई मौजूदा डेटा के आधार पर सुझाव देता है, लेकिन नई और मौलिक अवधारणा गढ़ने की क्षमता केवल मनुष्य के पास है। कलाकार, डिजाइनर, लेखक, उद्यमी और इनोवेटर—इन सभी को भविष्य में बड़ा स्थान मिलेगा।

रचनात्मक सोच का अभ्यास करें: पेंटिंग, कहानी लेखन, संगीत, डिजाइन थिंकिंग या किसी समस्या के नए समाधान निकालना। सिर्फ़ जानकारी याद कर लेना काफी नहीं है। ज़रूरी है सवाल करना, 'ये बात सच में सही है या नहीं? इसके पीछे कौन-सी धारणाएं छिपी हैं? इसका दूसरा पहलू क्या है?' मशीन आपको बहुत जवाब दे सकती है, लेकिन सही को चुनना और गहराई से समझना इंसान ही कर सकता है।

आपके सामने कोई अख़बार की ख़बर आती है कि 'यह दवा हर बीमारी का इलाज है।' मशीन उस खबर को हज़ारों तरीकों से कॉपी कर सकती है, लेकिन एक इंसान ही यह सवाल पूछ सकता है, 'क्या यह सच है? इसके पीछे किसका लाभ छिपा है? क्या इसके प्रमाण हैं?' जैसे किसी समझदार किसान की तरह, जो बीज बोने से पहले मिट्टी को परखता है। वह आंख बंद करके नहीं बोता। उसी तरह, सोचने वाला इंसान भी हर बात को परखता है। यही आदत आपको धोखे से बचाती है और सच्चाई तक ले जाती है।

जिम्मेदार और अनुशासन आदत है अपने वचन निभाने की। वह काम पूरा करना जो आपने तय किया, चाहे मन न हो, चाहे थकान हो। मशीन को मेहनत करने की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन इंसान जब मुश्किल होने पर भी टिकता है, तभी असली ताक़त पैदा होती है। थॉमस एडिसन, बल्ब बनाने वाला वैज्ञानिक, उसने हज़ारों बार प्रयोग किया और असफल हुआ। अगर वह बीच में छोड़ देते तो आज अंधेरा ही रहता।

एआई किसी समस्या का समाधान डेटा के आधार पर करता है, लेकिन जटिल मानवीय या सामाजिक समस्याओं का समाधान केवल इंसान ही सोच सकता है। 'क्यों', 'कैसे' और 'क्या' पूछने की आदत डालें। समस्या को देखने के कई दृष्टिकोण अपनाएं और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करें।

तकनीक तेजी से बदल रही है, इसलिए 'सीखते रहना' ही भविष्य का सबसे बड़ा हथियार है। नई तकनीकों, टूल्स और ट्रेंड्स के साथ खुद को अपडेट रखें। अगर आप एक कौशल में विशेषज्ञ हैं, तो उससे जुड़े नए क्षेत्रों में भी ज्ञान बढ़ाएं।

एआई के प्रयोग के साथ कई नैतिक सवाल भी उठते हैं—डेटा गोपनीयता, फेक न्यूज, साइबर सुरक्षा आदि। भविष्य में वे पेशेवर मूल्यवान होंगे जो तकनीक के साथ-साथ उसकी नैतिक सीमाओं को भी समझेंगे। समाज के लिए जिम्मेदार तकनीकी उपयोग की समझ विकसित करना बहुत ज़रूरी है। इसलिए, भविष्य में आपको मशीन से मुकाबला करने की ज़रूरत नहीं है। वह तो हमेशा तेज़ रहेगी। आपको इंसानियत को संभालना है,स्पष्ट सोच, मज़बूत चरित्र, सच लिखने-बोलने की हिम्मत, बातचीत और समझौते की कला, और दूसरों को प्रेरित करने की शक्ति। यही असली ताक़त है, यही गुण कभी भी बदले नहीं जा सकते।

भविष्य में एआई के दौर में असली ताक़त उन लोगों के पास होगी, जिनके पास ये मानवीय गुण होंगे। मसरल, सवाल पूछने की हिम्मत, कठिनाई में टिके रहने का अनुशासन, अपने विचारों को लिखकर स्पष्ट करने की कला, भरोसे से बातचीत करने की क्षमता और दूसरों को प्रेरित करने का नेतृत्व। यही वह रास्ता है जिससे इंसान हमेशा मशीन से आगे रहेगा।

अभियान

जब गांव की शांत रात में अचानक घंटियों की गूंज उठी और माना जाने लगा कि आज विघ्नहर्ता स्वयं हर घर की दहलीज़ पर आशीर्वाद लेकर पधारने वाले हैं

उस रात में कुछ ऐसा था जो गाँव के किसी व्यक्ति ने पहले कभी महसूस नहीं किया था। मार्गशीर्ष का महीना हमेशा से ठंडा और शांत रहता था, पर उस चतुर्थी की रात हवा में भक्ति का ऐसा कंपन फैला हुआ था मानो पूरा ब्रह्माण्ड किसी पवित्र घटना की तैयारी में लगा हो। नीले आकाश में चंद्रमा धीमे-धीमे तैर रहा था, और उसकी दूधिया रोशनी खेतों, पेड़ों, और कच्ची गलियों पर ऐसी उतर रही थी जैसे किसी अदृश्य हाथ ने धरती को चंदन की शीतलता से ढँक दिया हो।

गाँव के बच्चे खिड़कियों से आसमान की ओर देख रहे थे। कोई कह रहा था कि आज गणपति बप्पा ऊपर से धरती को निहार रहे हैं, तो कोई मान रहा था कि गणेश जी के वाहन मूषक की दौड़ती परछाईं कहीं बादलों में छिपी है। हर आँख में उत्सुकता थी, हर मन में उल्लास। बड़े-बुजुर्ग शांत भाव से बैठे थे, लेकिन उनकी आँखों में भी एक चमक थी — वह वही चमक होती है जब मन जानता है कि कोई दिव्य शक्ति उसके बहुत निकट है।

तड़के जब पहली किरणें धरती को छूने लगीं, तभी मंदिर की दिशा से एक लंबी, गूंजती हुई घंटी सुनाई दी। यह वह घंटी थी जो केवल किसी विशेष रात को बजाई जाती थी — वह रात जो विघ्नहर्ता की होती थी। गांव के हर घर में लोग जैसे किसी अदृश्य संकेत पर सक्रिय हो गए। महिलाएँ चावल से रंगोली बनाते हुए मंत्र गुनगुनाने लगीं, पुरुष फूल चुनकर पूजा की थाल सजा रहे थे और बच्चे अपनी छोटी-छोटी हथेलियों में दूर्वा छिपाकर तैयार बैठे थे कि कब पुजारी जी पुकारेंगे और कब वे गणेश जी के चरणों में अपनी पहली भेंट चढ़ाएँगे।

मंदिर की सीढ़ियाँ उस सुबह कुछ अलग ही लग रही थीं। रात भर ओस की बूंदों ने उन पर मोती जैसे बिंदु सजा दिए थे। जैसे ही भक्त वहाँ पहुँचे, ऐसा लगा मानो गणपति बप्पा स्वयं उनके स्वागत के लिए दरवाजे पर खड़े हों। मूर्ति पर चढ़ी लाल चंदन की छींट, आँखों में स्थिर शांत दया, और सूँड़ की मधुर मुस्कान किसी भी थके हुए मन को पलभर में हल्का कर दे — यह वही अनुभव था जिसे लोग शब्दों में नहीं, सिर्फ अपने दिल में सँजो कर रखते हैं।

पूजा आरंभ होते ही जब पहली बार मंत्र उच्चारित हुआ—

ॐ गं गणपतये नमः

तो ऐसा लगा जैसे पृथ्वी ने उस ध्वनि को अपने भीतर खींच लिया। हवा का हर कण उस मंत्र को दूर गाँवों तक ले गया। पेड़ों की पत्तियाँ धीमे-धीमे हिलने लगीं जैसे वे भी इस जप में सम्मिलित हो गई हों। और गाँव के हर घर में बैठे लोग इस ध्वनि को सुनते ही ध्यान की अवस्था में चले गए। उस क्षण किसी को अपनी चिंता याद नहीं रही, किसी को अपना दुःख नहीं, किसी को अपना भय नहीं — क्योंकि माना जाता है कि जब गणेश मंत्र गूँजता है, तब सारी नकारात्मक ऊर्जा स्वयं रास्ता छोड़ देती है।

गाँव की एक वृद्धा, जो अपने जीवन में अनेक कठिन दौर देख चुकी थीं, धीरे से बोलीं कि जब भी कोई व्यक्ति मन से टूट जाए, जब भी जीवन में हर दिशा बंद हो जाए, तब एक ही उपाय कभी विफल नहीं होता — गणेश जप। वे बताती थीं कि एक बार उनके परिवार पर इतनी विपत्ति आई कि घर-आँगन की दीवारें भी बेचने की नौबत आ गई थी। उन्हीं दिनों उन्होंने विनायक चतुर्थी पर लगातार 21 दिनों तक मंत्र जप किया और उसी महीने उनके जीवन में ऐसा परिवर्तन हुआ जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। और यही बात वे हर किसी को अनुभव के रूप में बतातीं कि गणेश का आशीर्वाद समय को बदलने की क्षमता रखता है।

दिन चढ़ते-चढ़ते मंत्रों का जप और तेज होता गया। गाँव का वातावरण धीरे-धीरे आध्यात्मिकता के सागर में डूबने लगा। लोग मंत्र संरचना में रम गए—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गौं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा

यह मंत्र जब हवा में बहता, तो लगता मानो किसी शक्ति ने हर संकट को पकड़कर दूर फेंक दिया हो। कई लोग बताते थे कि जब वे अपनी आँखें बंद करके इस मंत्र का उच्चारण करते, तो उनके भीतर अचानक एक गर्म, उजली, दिव्य रोशनी महसूस होने लगती थी—जैसे कोई उनके हृदय को पकड़ कर कह रहा हो, "डरो मत, मैं हूँ।"

संध्या होने लगी और दीपक जलते ही वातावरण में एक गहरा सौम्यपन उतर आया। नारियल की सुगंध, धूप की महक, फूलों की भीनी खुशबू—सब मिलकर एक ऐसा आध्यात्मिक संसार बना चुके थे जिसमें कदम रखते ही मन स्वयं को हल्का महसूस करता है। लोगों ने अनुभव किया कि आज उनके जीवन का कोई न कोई बोझ कम हो गया है, कोई द्वार खुल गया है, कोई जंजीर टूट गई है।

जब रात की अंतिम आरती हुई, और सबने मिलकर "जय गणेश देवा" गाया, तब ऐसा लगा जैसे पूरी पृथ्वी उस स्वर में डूब गई हो। उस पल में जो शांति मिली, वह किसी वरदान की तरह थी। लोगों को यह आभास हुआ कि गणेश जी वास्तव में उस रात उनके घरों में आए थे—शायद अदृश्य रूप में, लेकिन उनकी कृपा दिखाई सबको दे रही थी।

वर्षों बाद भी लोग उस चतुर्थी की चर्चा करते हैं—उस रात की जब आशीर्वाद हवा में तैर रहा था, जब जीवन के अटके हुए काम चल पड़े थे, जब मन के दर्द घुलकर कहीं खो गए थे, और जब हर भक्त ने महसूस किया था कि भगवान गणेश के समक्ष कोई इच्छा छोटी नहीं होती और कोई समस्या बड़ी नहीं रहती।

यदि आज भी आपके जीवन में कोई कार्य रुक गया है, यदि कोई सपना अधूरा है, यदि मन में कोई बोझ है, तो उसी भाव से गणेश मंत्र का जप कीजिए। क्योंकि जब विघ्नहर्ता कृपा करते हैं, तब असंभव भी सहज सम्भव बन जाता है, और जीवन आशाओं के नए दीपक जला देता है—बिलकुल उसी रात की तरह जब पूरा गाँव गणेश मंत्रों की दिव्य ध्वनि में डूब गया था।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सीमावर्ती कच्छ जिले को को एक ही दिन में 680 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की सौगात दी

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भुज शहर से कच्छ जिले के 503 करोड़ रुपए से अधिक के 55 विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास के साथ गांधीधाम मनपा के 176 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शिलान्यास किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- कच्छ में उद्योगों और पर्यटन के विकास के कारण स्थानीय रोजगार के अनेक अवसर सृजित हुए
- आगामी जनवरी में राजकोट में आयोजित होने वाली सौराष्ट्र-कच्छ क्षेत्र की रीजनल कॉन्फ्रेंस से कच्छ के औद्योगिक निवेश को नया बल मिलेगा
- कच्छ को ग्रोथ हब के रूप में विकसित करने के लिए रीजनल इकोनॉमिक प्लान तैयार किया जा रहा है
- कच्छ जिले के विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण-शिलान्यास से शहरों में आंतरिक कनेक्टिविटी बढ़ेगी और यात्रा सुगम होगी

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को भुज शहर के लालन कॉलेज मैदान से सीमावर्ती कच्छ जिले को 503 करोड़ रुपए से अधिक के 55 विकास कार्यों की सौगात दी। उन्होंने 498 करोड़ रुपए के 52 कार्यों का शिलान्यास और 5.79 करोड़ रुपए लागत के 3 कार्यों का लोकार्पण किया।

कच्छ की धरा पर पहुंचे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से कच्छी लोगों के जीवन में आए बदलाव को लेकर कहा कि कच्छी माडुओं के जज्बे और पुरुषार्थ से जिले में विकास के नए चमत्कार हुए हैं। प्रधानमंत्री के विजन से कच्छ सबसे तेजी से विकास करने वाला जिला बना है। विनाशक भूकंप के बाद प्रधानमंत्री के विकास के विजन तथा कच्छ के नागरिकों के सहयोग से आज जिले में उद्योग-धंधे, रोजगार और पर्यटन का तेज गति से विकास हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नर्मदा की पाइपलाइन और नहरों के नेटवर्क से कच्छ के विकास का कायाकल्प हुआ है। कच्छ का रण उत्सव, स्मृति वन और श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा मेमोरियल कच्छी संस्कृति के विकास मंदिर बन गए हैं। उन्होंने कहा कि कच्छ जिला सुनियोजित विकास के साथ आगे बढ़ रहा है। केंद्र और राज्य सरकार ने कच्छ को दोगुनी सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। गांधीधाम को महानगर पालिका का दर्जा मिलने से विकास की गति और अधिक तेज होगी।

विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास से कच्छ में बढ़ने वाली बुनियादी ढांचागत सुविधाओं का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि भुज, अंजार, अबडासा, मांडवी और रापर क्षेत्रों को 503 करोड़ रुपए से अधिक के कार्यों से विकास की नई दिशा मिलेगी। उन्होंने कहा कि कच्छ जिले के शहरों को जोड़ने वाली आंतरिक सड़कों के मजबूतीकरण और नवीनीकरण से पर्यटन को गति मिलेगी और नागरिकों का आवागमन सुगम होगा। इस मौके पर उन्होंने नागरिकों से जल संचय सहित अन्य कार्यों में सहभागी होने का अनुरोध भी किया।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में कच्छ में दुनिया का सबसे बड़ा हाइब्रिड रिन्यूएबल एनर्जी पार्क आकार ले रहा है, जो गुजरात को रिन्यूएबल एनर्जी का हब बनाएगा। प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता से धोरडो रण उत्सव का कारण 'इंटरनेशनल टूरिज्म डेस्टिनेशन' बना है। धोरडो के सफेद रण को दुनिया के 'बेस्ट टूरिज्म विलेज' की सूची में स्थान मिला है। कच्छ में उद्योगों और पर्यटन विकास के कारण स्थानीय रोजगार के अनेक अवसर सृजित हुए हैं।

मुख्यमंत्री ने राज्य के सर्वांगीण विकास के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि गुजरात के हर क्षेत्र के विकास की स्थानीय क्षमता को ध्यान में रखते हुए उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस शुरू की गई है। गुजरात में चार रीजनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन है। आगामी जनवरी में राजकोट में सौराष्ट्र-कच्छ क्षेत्र की रीजनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएगी और इससे कच्छ के औद्योगिक निवेश को नया बल मिलेगा।

विश्वस्तरीय शहरों का निर्माण करने के लिए वर्ष 2047 तक की योजना के बारे में जानकारी देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि शहरों के निकट स्थित क्षेत्रों के विकास के लिए ग्रोथ हब मॉडल लागू किया गया है। कच्छ को ग्रोथ हब के रूप में विकसित करने के लिए रीजनल इकोनॉमिक प्लान तैयार किया जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान कच्छ जिले के नागरिकों के जोश की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने प्रशासनिक तंत्र और नागरिकों के समन्वय की प्रशंसा की। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान कच्छी लोगों के जज्बे और देश के लिए सर्वस्व समर्पित करने की राष्ट्र प्रथम की भावना को अभिनंदन के पात्र बताया।

मुख्यमंत्री ने नागरिकों से प्रधानमंत्री के 2047 तक भारत को विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के संकल्प में सहभागी होने तथा 'वोकल फॉर लोकल' और 'लोकल फॉर ग्लोबल' के मंत्र को जीवन में आत्मसात कर स्थानीय चीजों की खरीदी करने का अनुरोध किया। उन्होंने नागरिकों से आत्मनिर्भर गुजरात से आत्मनिर्भर भारत बनाने में आगे रहने की अपील की।

उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा ने कहा कि आज विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास का समारोह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के कच्छ के प्रति विशेष प्रेम एवं भाव का परिचायक है। राज्य मंत्री ने गुजरात सरकार के कौशल वर्धन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के दृष्टिकोण को सराहते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के निर्णय से ही कच्छ में शिक्षकों की विशेष भर्ती संभव हो पाई है। कच्छ में शिक्षकों की विशेष भर्ती प्रक्रिया से और 'जहां नौकरी, वहीं सेवानिवृत्ति' के निर्णय से सुदूरवर्ती गांवों तक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल पाएगी। उन्होंने सड़कों आदि सहित ढांचागत सुविधाओं के विकास की गुजरात सरकार की अविरत यात्रा की प्रशंसा की। राज्य मंत्री ने नागरिकों से देश के विकास में तत्परता के साथ सहभागी होने का अनुरोध किया। उन्होंने कच्छ जिले के विकास कार्यों के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

कच्छ-मोरबी के सांसद श्री विनोदभाई चावड़ा ने कहा कि गांधीधाम को मिले महानगर पालिका के दर्जे से इस क्षेत्र में नया परिवर्तन आएगा। उन्होंने कच्छ के अनेक विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री चावड़ा ने कहा कि डबल इंजन सरकार की कच्छ के प्रति निरंतर चिंता के कारण आज कच्छ में पर्यटन, उद्योग और पशुपालन जैसे क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास हुआ है।

भुज के विधायक श्री केशुभाई पटेल ने विकास कार्यों की सौगात देने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार ने कच्छ जिले को विकास के क्षेत्र में अनेक भेंट प्रदान कर अग्रसर रखा है। सरकार ने कच्छ जिले की कई समस्याओं का सुखद समाधान किया है, जिससे कच्छी लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। उन्होंने कच्छ के विकास का श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल को देते हुए कहा कि कच्छ में सड़कों के विकास से यात्रा और परिवहन सुगम होगा।

कच्छ पधारे मुख्यमंत्री का विभिन्न संगठनों और जिला प्रशासन की टीम ने स्थानीय संस्कृति के अनुसार कच्छी पगड़ी और शॉल भेंट कर स्वागत किया।

उल्लेखनीय है कि कच्छ जिले में आज विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण और शिलान्यास से आंतरिक सड़कों का नवीनीकरण किया जाएगा। शिलान्यास कार्यों में भुज शहर की सभी महत्वपूर्ण सड़कों को शामिल किए जाने से शहर के नागरिकों को उत्तम परिवहन सुविधा उपलब्ध होगी। मुख्यमंत्री ने सड़क एवं मकान विभाग के 393.39 करोड़ रुपए के 23 कार्यों का शिलान्यास, वन विभाग के 2.60 करोड़ रुपए के छारी ढंढ और पडाला मैंग्रोव लर्निंग सेंटर के विकास कार्य का लोकार्पण, सिंचाई विभाग के 6 करोड़ रुपए के अधिक के खर्च से कच्छ के विभिन्न गांवों में तालाब सुधार के कार्यों का शिलान्यास, शिक्षा विभाग द्वारा कच्छ के गुनेरी में 3.19 करोड़ रुपए के खर्च से निर्मित नए माध्यमिक स्कूल का लोकार्पण, गुजरात राज्य सड़क विकास निगम (जीएसआरडीसी) द्वारा 42.50 करोड़ रुपए की लागत से प्रस्तावित भुज-मुंद्रा रोड और 19.72 करोड़ रुपए के खर्च से भुज-नखत्राणा रोड के मजबूतीकरण और रिसर्फेसिंग कार्यों के शिलान्यास के साथ ही सड़क एवं भवन पंचायत विभाग के 26.52 करोड़ रुपए के खर्च से प्रस्तावित विभिन्न सड़कों के रिसर्फेसिंग कार्यों का शिलान्यास किया।

कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री जनकसिंह जाडेजा, अबडासा के विधायक श्री प्रद्युम्नसिंह जाडेजा, अग्रणी श्री देवजीभाई वरचंद, भुज नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रश्मिबेन सोलंकी, भुज तहसील पंचायत अध्यक्ष श्री विनोदभाई वरसाणी, कच्छ कलेक्टर श्री आनंद पटेल सहित कई अधिकारी, पदाधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

अहमदाबाद इंटरनेशनल बुक फेस्टिवल 2025 : 11 दिनों में 8 .21 लाख से अधिक पुस्तक प्रेमियोंने भाग लिया

(जीएनएस)। अहमदाबाद : साबरमती रिवरफ्रंट इवेंट सेंटर में 13 से 23 नवंबर तक आयोजित अहमदाबाद इंटरनेशनल बुक फेस्टिवल 2025ने इस बार लोकप्रियता का नया इतिहास रचा है। इस 11 दिवसीय महोत्सव में कुल 8.21 लाख से अधिक आगंतुकोंने भाग लिया, जिससे यह साहित्यिक उत्सव न केवल राज्य में, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी सबसे अधिक दर्शकों वाला पुस्तक महोत्सव बन गया है।

13 नवंबर को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान के हाथों इस महोत्सव का उद्घाटन किया गया था। वंदे मातरम के समूहगान और स्वदेशी प्रोत्साहन प्रतिज्ञा से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित पुस्तक 'बैरिस्टर मिस्टर पटेल' सहित कई पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया।

अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया और केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा लगभग 1 लाख वर्गफुट के विशाल परिसर में बनाए गए इस महोत्सव में 300 से अधिक प्रकाशकों ने भाग लिया। शहर के सभी आयु वर्गों के लिए तीन विशेष ज़ोन बनाए गए थे, जिनमें बाल साहित्य, रचनात्मक सत्र, काव्य पाठ, लेखकों के साथ संवाद, वर्कशॉप्स और फ़िल्म फेस्टिवल जैसी गतिविधियाँ लगातार दर्शकों को आकर्षित करती रहीं।

इस बुक फेस्टिवल में बच्चों की कार्यशालाएँ, कहानी वाचन, कला-हस्तकला कार्यक्रम और चिल्ड्रन फ़िल्म फेस्टिवल ने विशेष लोकप्रियता हासिल की। स्कूल बोर्ड के शताब्दी महोत्सव के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में हज़ारों विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया।

युवाओं के लिए आयोजित 'ज्ञान गंगा' वर्कशॉप्स ने भी महोत्सव की ज़बरदस्त सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कविता लेखन, नाटक, फ़िल्म स्क्रिप्टिंग और बुक डिज़ाइन जैसी रचनात्मक कार्यशालाओं के साथ-साथ विभिन्न पुस्तक लोकार्पण सत्रों ने विद्यार्थियों, लेखकों और रचनाकारों को एक साथ जोड़ा।

इसके अलावा विदेशी वक्ताओं की उपस्थिति ने इस महोत्सव को वैश्विक पहचान दी। चिली, स्पेन, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका से आए चर्चित विचारकों ने भारतीय साहित्य और संस्कृति से जुड़े विषयों पर विशेष सत्र प्रस्तुत किए। साथ ही मुख्य मंच पर प्रतिदिन आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने महोत्सव को जीवंत बनाए रखा। इस महोत्सव को इसकी उत्कृष्ट व्यवस्था और सुविधाओं के कारण भी खूब सराहा गया। स्वच्छ परिसर, विशाल फूड कोर्ट, स्टार्टअप ज़ोन, वीआर गेमिंग का अनोखा स्टैम्प प्रदर्शन और पाठन के लिए अनुकूल वातावरण ने कई परिवारों को यहाँ लंबे समय तक समय बिताने के लिए आकर्षित किया। इस प्रकार आयोजकों की मेहनत और उत्कृष्ट प्रबंधन के चलते अहमदाबाद इंटरनेशनल बुक फेस्टिवल 2025 को 'ज्ञान का महाकुंभ' के रूप में विशेष पहचान मिली है।

'शंटिंग मेला' का सफल आयोजन

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल के परिचालन विभाग द्वारा सुरक्षित ट्रेन परिचालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हाल ही में गोधरा स्टेशन पर "शंटिंग मेला" का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार संरक्षा पश्चिम रेलवे के लिए सर्वोपरि है। इसी क्रम में परिचालन विभाग के कर्मचारियों के लिए गोधरा में शंटिंग मेला आयोजित किया गया, जिसमें 107 कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। सेमिनार में प्रश्नोत्तर सत्र एवं खुली चर्चा के माध्यम से प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस मेले के अंतर्गत आयोजित सेमिनार में परिचालन विभाग के रेल कर्मचारियों से शंटिंग कार्य के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियाँ, लोड की स्टेबलिंग के समय आवश्यक एहतियात, पावर ब्लॉक के दौरान सुरक्षा उपाय, दिन एवं रात में हाथ संकेतों का उपयोग, पॉइंट्स की क्लैम्पिंग के समय सावधानियाँ आदि के बारे में उच्च अधिकारियों द्वारा खुली चर्चा की गई और उनको संरक्षा से जुड़े इस महत्वपूर्ण मुद्दों पर जागरूक किया गया।

श्री सक्सेना ने बताया कि वडोदरा मंडल के परिचालन विभाग की यह पहल रेलवे कर्मचारियों में सुरक्षा प्रक्रियाओं को मजबूत करने, स्थितिजन्य जागरूकता बढ़ाने तथा निरंतर सीखने की संस्कृति को प्रोत्साहित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने नवगठित गांधीधाम महानगर पालिका को एक ही दिन में एक साथ 176 करोड़ रुपए के 66 विकास कार्यों की भेंट दी

- नगर पालिका से महानगर पालिका बने गांधीधाम शहर में आकार लेने वाले मॉडल फायर स्टेशन, स्मार्ट लाइब्रेरी, आइकॉनिक प्रवेश द्वार, उद्यान, सड़कों, सीवरेज, जल और स्टॉर्म वाटर जैसे विकास कार्यों से शहर को मिलेगी एक नई पहचान
- गोपालपुरी गेट से सर्वोदय क्रिकेट ग्राउंड तक की सड़क गौरव पथ के रूप में विकसित की जाएगी

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- गुजरात के अहम औद्योगिक केंद्र और कच्छ की आर्थिक राजधानी गांधीधाम को विकास की नई बुलंदियों पर पहुंचाने के लिए राज्य सरकार कृतसंकल्प
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शहरीकरण को चुनौती नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में स्वीकार करके सुनियोजित शहरी विकास की दिशा दिखाई
- गुजरात में समग्र शहरी विकास के लिए शहरी विकास बजट में 40 फीसदी की वृद्धि के साथ राज्य सरकार ने किया 30 हजार करोड़ रुपए का आवंटन
- गांधीधाम मनपा के 176 करोड़ रुपए के विकास कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की लोगों की सुविधा और खुशहाली के लिए दी गई 'ईज ऑफ लिविंग' की संकल्पना और सर्वग्राही विकास को सार्थक करेंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : नगर पालिका से महानगर पालिका बनने के बाद रविवार को पहली बार गांधीधाम शहर पहुंचे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शहर को 176 करोड़ रुपए के 66 विकास कार्यों की सौगात दी।

इसके साथ ही, उन्होंने ओस्लो सर्कल में डॉ. बाबासाहब अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करके उनकी पुनर्स्थापित प्रतिमा का अनावरण और नवनिर्मित फ्लाईओवर का 'डॉ. बाबासाहब अंबेडकर' नामकरण किया तथा सर्कल डेवलपमेंट और पार्किंग सुविधा के विकास कार्यों का लोकार्पण किया।

गांधीधाम के गोपालपुरी स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में 176 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का ई-शिलान्यास करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महानगर के नागरिक के रूप में गौरव प्राप्त करने के लिए गांधीधाम वासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि गांधीधाम महानगर पालिका के गठन के बाद उनका पहली बार यहां आना हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और राज्य सरकार कच्छ की आर्थिक राजधानी के रूप में जाने जाने वाले और राज्य के महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र गांधीधाम को विकास की नई बुलंदियों पर पहुंचाने के लिए कृतसंकल्प हैं। इस संकल्प को आगे बढ़ाते हुए 176 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वैश्विक नेता और यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में विकास का रोल मॉडल बन चुके गुजरात में बढ़ते विकास के कारण लोग रोजी-रोटी के लिए नगरों में बस रहे हैं। ऐसे में, नगरों में जन कल्याण और बुनियादी सुविधाओं के कार्यों में गति लाने के लिए राज्य सरकार नई महानगर पालिकाओं का गठन कर रही है।

इसी विजन के अंतर्गत विकास की गति और व्यापकता को बढ़ाने के लिए गांधीधाम नगर पालिका में आसपास के 11 गांवों को शामिल कर नई महानगर पालिका का गठन किया गया है।

उन्होंने आगे कहा कि पहले गांधीधाम नगर पालिका का सालाना बजट 110 करोड़ रुपए था, लेकिन महानगर पालिका का दर्जा मिलने के बाद इससे छह गुना अधिक यानी 608 करोड़ रुपए का बजट स्वीकृत किया गया है।

इतना ही नहीं, गांधीधाम को शहरी विकास की विभिन्न योजनाओं से पिछले तीन वर्षों में 255 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने गांधीधाम महानगर पालिका द्वारा शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल किए गए कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि समग्र शहर के विकास की सोच को साकार करने वाले ये कार्य सर्वग्राही विकास की झलक दिखाते हैं। समय के अनुकूल और नगर की प्राथमिक आवश्यकताओं के कार्यों में आइकॉनिक रोड, सड़कें, पानी, सीवरेज, उद्यान-तालाब सहित जन-जन को छूने वाले विकास कार्यों के साथ ही मनपा ने फायर स्टेशन और मॉडर्न लाइब्रेरी जैसे आधुनिक विकास कार्यों को भी शामिल किया है, जो सर्वग्राही विकास को दर्शाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गुजरात के शहरों ने देश को बताया है कि शहरों का विकास कैसा होना चाहिए, किस स्केल का और किस स्पीड का होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पहले केवल विकास की बातें ही होती थीं, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की राजनीति के जरिए विकास को धरातल पर उतारा है। प्रधानमंत्री ने कच्छ को भूकंप की आपदा से उबारकर विकास की राह पर तेज गति से अग्रसर किया है। प्रधानमंत्री के विजन और विकास से व्यापार, उद्योग, रोजगार, व्यवसाय, शिक्षा और स्वास्थ्य सहित सभी क्षेत्रों में गुजरात ने विकास की चरम सीमा को पार किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शहरीकरण को चुनौती नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में स्वीकार करके सुनियोजित शहरी विकास की दिशा देश को दिखाई है। प्रधानमंत्री ने शहरी विकास के विजन को साकार करने के लिए योजनाबद्ध और समयानुकूल शहरी विकास के लिए 2005 में शहरी विकास वर्ष मनाने के बाद गुजरात की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर 2010 में स्वर्णिम जयंती मुख्यमंत्री शहरी विकास योजना लागू की थी। छोटे शहरों के लिए बड़ी सुविधाएं प्रदान करने वाली इस योजना के तहत राज्य सरकार ने पिछले डेढ़ दशक में 57 हजार करोड़ रुपए से अधिक राशि का प्रावधान किया है। प्रधानमंत्री ने नगर पालिका और महानगर पालिकाओं में क्षमता निर्माण एवं सशक्तिकरण के समयबद्ध आयोजन के माध्यम से समग्र शहरी विकास के सफल प्रयोग दिए हैं। राज्य सरकार उनकी इस सोच के अनुरूप शहरों के सुनियोजित विकास के साथ 'अर्निंग वेल, लिविंग वेल' यानी बेहतर कमाई और बेहतर जीवन के मंत्र को चरितार्थ करने के लिए 2025 को शहरी विकास वर्ष के रूप में मना रही है।

इसके लिए शहरी विकास के बजट में गत वर्ष की तुलना में 40 फीसदी की वृद्धि कर 30 हजार करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शहरी विकास को एक बेंचमार्क तक पहुंचाए जाने का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अब हमें भविष्य की जरूरतों के मुताबिक शहरों का विकास करना है। इसके लिए शहरों को ग्रोथ हब के रूप में विकसित करने की योजना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने गुजरात के प्रत्येक क्षेत्र की क्षमताओं को पहचान कर उसके विकास की मजबूत नींव रखी है और वाइब्रेंट समिट के जरिए गुजरात के औद्योगिक विकास को दुनिया में एक नई दिशा और ऊंचाई प्रदान की है। उनके इस विजन को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देने, स्थानीय उत्पादन बढ़ाने और रोजगार अवसरों का सृजन करने के लिए राज्य सरकार रीजनल वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस का आयोजन कर रही है। इससे निवेश अधिक से अधिक बढ़ेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि जनवरी में राजकोट में आयोजित होने वाली सौराष्ट्र-कच्छ की वाइब्रेंट रीजनल कॉन्फ्रेंस कच्छ स्थित बड़े उद्योगों के अनुरूप स्थानीय उद्योगों के विकास और अधिक से अधिक निवेश आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 2047 तक विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए आज ही से शहरों को भविष्योन्मुखी बनाने के आयोजन पर जोर देते हुए 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' सूत्र के जरिए टिकाऊ शहरों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने और गांधीधाम से इस पहल का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। उल्लेखनीय है कि नगर पालिका से महानगर पालिका बनने के बाद पहली बार गांधीधाम शहर पहुंचे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का लोगों ने एयरपोर्ट से लेकर गोपालपुरी तक विभिन्न क्षेत्रों में ढोल-नगाड़ों के साथ भावपूर्ण स्वागत किया। मुख्यमंत्री के स्वागत में गांधीधाम शहर के विभिन्न समाज के नागरिक शामिल हुए और राज्य सरकार के सर्व समावेशी विकास की प्रतिबद्धता का स्वागत किया। इस मौके पर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा ने कहा कि विभाजन की वेदना से खड़ा हुआ यह गांधीधाम शहर आज आर्थिक और बंदरगाह गतिविधियों में भारत का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है। सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में विकसित गांधीधाम के विकास को और तेज गति देने के लिए राज्य सरकार ने इसे महानगर पालिका का दर्जा दिया है, जिससे इस शहर का योजनाबद्ध तरीके से और विकास संभव हो पाएगा।

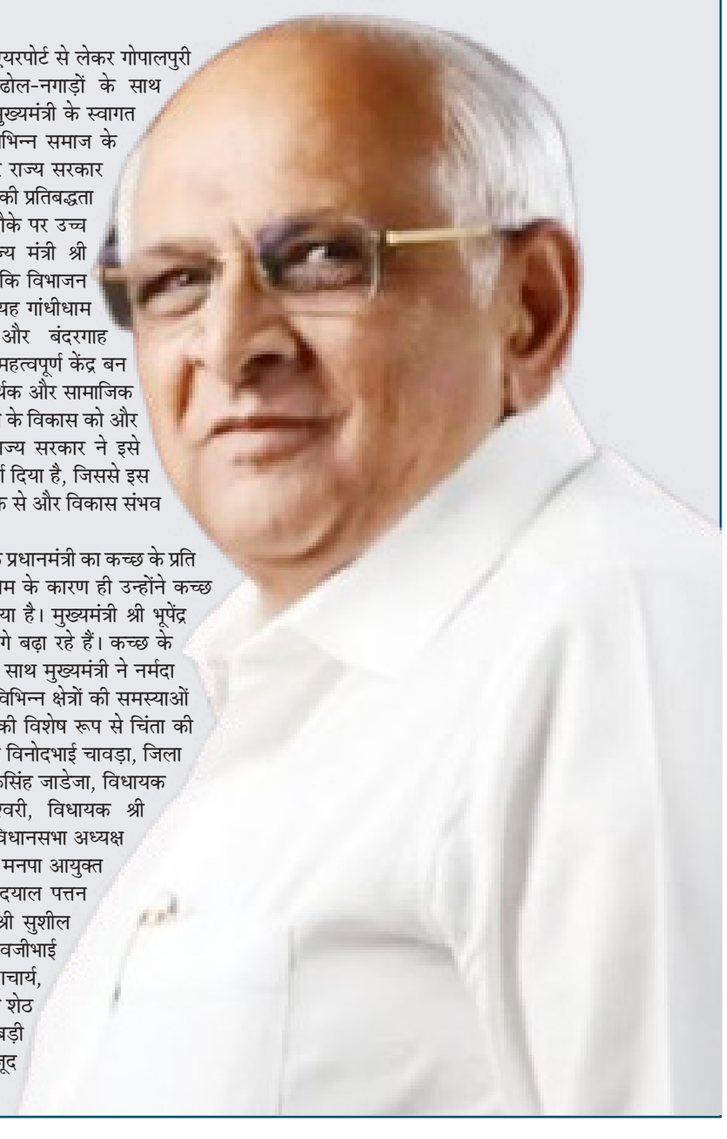

राज्य मंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री का कच्छ के प्रति विशेष प्रेम है और इसी प्रेम के कारण ही उन्होंने कच्छ का सार्वत्रिक विकास किया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल इसी विजन को आगे बढ़ा रहे हैं। कच्छ के प्रति विशेष आत्मीयता के साथ मुख्यमंत्री ने नर्मदा जल और सड़कों सहित विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का समाधान कर कच्छ की विशेष रूप से चिंता की है। कार्यक्रम में सांसद श्री विनोदभाई चावड़ा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री जनकसिंह जाडेजा, विधायक श्रीमती मालतीबेन महेश्वरी, विधायक श्री विरेन्द्रसिंह जाडेजा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती नीमाबेन आचार्य, मनपा आयुक्त श्री मनीष गुरुवाणी, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के चेयरमैन श्री सुशील कुमार सिंह, अग्रणी श्री देवजीभाई वरचंद, श्री धवलभाई आचार्य, पूर्व नपा अध्यक्ष श्री तेजस शेठ सहित कई अग्रणी और बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

कांग्रेस अब डूबता बोझ बन गई है, देश आगे बढ़ रहा है और राजनीति का नया समीकरण बन रहा है: गंजबासौदा में शिवराज सिंह चौहान का प्रहार

(जीएनएस)। भोपाल। विदिशा जिले के गंजबासौदा में रविवार को आयोजित विशाल जनसभा में केंद्रीय कृषि, किसान कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस पर अपने प्रखर अंदाज़ में निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस अब राजनीतिक दल नहीं, बल्कि ऐसा बोझ बन गई है जिसे जो भी साथ ले चलता है, वही डूब जाता है। उनकी आवाज़ में वही पुराना जोश और व्यंग्य की धार थी जिसने हर बार भीड़ को उत्साह से भर दिया। उन्होंने कहा कि दिल्ली में अरविंद केजरीवाल हों, उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव हों या फिर बिहार में लालू प्रसाद यादव—कांग्रेस के साथ हाथ मिलाते ही सभी का राजनीतिक बंटाधार हो गया। चौहान ने तंज कसते हुए कहा कि देश आज निर्णायक स्थिति में है, बहनें सरकार बना रही हैं, और बिहार में जो बदलाव देखने को मिला है, वह भी महिलाओं की शक्ति और समझ का ही परिणाम है।

गंजबासौदा रविवार को एक राजनीतिक केंद्र में बदल गया था, जहाँ विकास कार्यों का लोकार्पण, भूमिपूजन और जनसभा—तीनों ने मिलकर एक उत्सव जैसा वातावरण बना दिया था। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संयुक्त रूप से 150 बिस्तरों वाले आधुनिक सिविल अस्पताल का लोकार्पण किया। इसी के साथ 64 करोड़ 29 लाख रुपये की लागत से तैयार 26 विकास कार्य जनता को समर्पित किए गए और 85 करोड़ 84 लाख रुपये की लागत वाले 28 नए कार्यों का भूमिपूजन किया गया। नेताओं के शहर में प्रवेश करते ही रोड शो में जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। छतों और गलियों से लोगों ने पुष्पवर्षा की, ढोल-नगाड़ों की आवाज़ से पूरा शहर गूंजता रहा और नेताओं का स्वागत किसी पर्व की तरह किया गया।

शिवराज सिंह चौहान ने अपने संबोधन में कहा कि मध्य प्रदेश आज विकास के सबसे ऊर्जावान दौर से गुजर रहा है। सड़कें, सिंचाई, पेयजल, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि और उद्यानिकी—हर क्षेत्र में आधारभूत ढांचा मजबूत हो रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव योजनाओं को जिस तेज़ी से आगे बढ़ा रहे हैं, वह नया प्रशासनिक मॉडल तैयार कर रहा है, और वे स्वयं व केंद्र सरकार मध्य प्रदेश के विकास में किसी प्रकार की कमी नहीं आने देंगे। चौहान ने यह भी कहा कि विदिशा और गंजबासौदा जैसे क्षेत्र उद्योग, कृषि और व्यापार की अपार संभावनाओं से भरे हैं और आने वाले वर्षों में ये जिले नए औद्योगिक मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान बनाएँगे। उन्होंने बेतवा नदी का पानी पाराशरी नदी तक पहुँचाने वाले जल प्रबंधन प्रयास को क्षेत्र के भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इससे सिंचाई की समस्या दूर होगी और किसानों को नई ताकत मिलेगी। उन्होंने कृषि के साथ उद्यानिकी, पशुपालन और प्रसंस्करण उद्योग जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करने की बात भी रखी।

शिवराज सिंह चौहान ने मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए कहा कि फर्जी नामों और घुसपैठियों को हटाना राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत किसी भी कीमत पर धर्मशाला नहीं बनेगा और इस देश में घुसपैठ बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने नशा मुक्ति अभियान, स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और महिला सशक्तिकरण को लेकर चल रही पहलों का भी समर्थन किया और जनता से अपील की कि समाज को मजबूत बनाने में हर परिवार अपनी भूमिका निभाए।

सभा के अंत में चौहान और मुख्यमंत्री मोहन यादव के प्रति जनता का उल्लासपूर्ण समर्थन साफ दिख रहा था। विधायक हरिसिंह रघुवंशी सहित स्थानीय प्रतिनिधि और हजारों नागरिक कार्यक्रम में मौजूद थे, जो गंजबासौदा के लिए इसे एक यादगार दिन बना गए।

वडोदरा में मानवता का महाकुंभः बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर के रक्तदान शिविर में उमड़ा स्नेह, 992 यूनिट रक्त संग्रह कर बनी मिसाल

(जीएनएस)। वडोदरा में रविवार का दिन मानवता, सेवा और सद्भावना की अद्भुत मिसाल बनकर दर्ज हुआ, जब बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर, अटलादरा द्वारा आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में श्रद्धालु और समाजसेवी बड़ी संख्या में उमड़ पड़े। भगवान स्वामीनारायण के छठे आध्यात्मिक उत्तराधिकारी और बीएपीएस संस्था के प्रमुख महंत स्वामी महाराज की 92वीं जन्म जयंती आगामी फरवरी में वडोदरा में भव्य समारोहों के साथ मनाई जानी है, और उसी उत्सव की पूर्वभूमि के रूप में यह शिविर मानव सेवा का अद्वितीय पर्व बन गया। सुबह जैसे ही मंदिर परिसर में रक्तदान शिविर का शुभारंभ हुआ, वातावरण में उत्साह और सेवा की भावना की अनोखी लहर दौड़ गई। संस्था के वरिष्ठ संत नारायण मुनि स्वामी ने विधिवत शुभारंभ किया और स्वयं रक्तदान करके समाज के लिए प्रेरणा का उदाहरण प्रस्तुत किया। संतों को आगे बढ़ते देख श्रद्धालु, युवाओं, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों तक सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हर दाता के चेहरे पर संतोष और गर्व का मिश्रण दिखाई दे रहा था, क्योंकि सभी जानते थे कि उनकी यह छोटी-सी सहभागिता किसी जरूरतमंद की जिंदगी बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक चले इस महाशिविर में कुल 992 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ, जो वडोदरा में आयोजित रक्तदान अभियानों के रिकॉर्ड को छूने जैसा रहा। कई दाताओं ने पहली बार रक्तदान किया और इसे जीवनभर याद रखने योग्य अनुभव बताया। चिकित्सा टीम, स्वयंसेवकों और बीएपीएस सेवा मंडल ने अत्यंत अनुशासित और संवेदनशील तरीके से पूरी व्यवस्था संभाली। शिविर में आए हर व्यक्ति को न केवल सेवा का अवसर मिला, बल्कि यह भी महसूस हुआ कि समाज जब एक उद्देश्य के लिए एकजुट होता है, तब उसकी शक्ति कितनी विशाल और प्रभावशाली होती है।

कच्चे रास्ते पर शुरू हुई जिंदगी की जंग झोली में ले जाते हुए प्रसूता ने दिया जन्म एम्बुलेंस में जुड़वां बच्चों का सुरक्षित प्रसव

(जीएनएस)। छोटा उदेपुर जिले की नसवाडी तहसील के घुमना गांव में रविवार का दिन उस क्षण का साक्षी बना जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। गर्भवती रवीता विकेश भील को अचानक तेज प्रसव पीड़ा शुरू हुई, लेकिन गांव तक पक्की सड़क न होने के कारण परिवार के सामने समस्या पहाड़ की तरह खड़ी थी। घर से अस्पताल की दूरी ज्यादा नहीं थी, पर रास्ता ऐसा था जिसे पार करना किसी परीक्षा से कम नहीं था। मजबूर होकर परिजनों ने रवीता को एक बड़ी झोली में लिटाया और कंधों पर उठाकर पथरीले, उबड़-खाबड़ रास्ते की ओर चल पड़े। हवा में तनाव साफ महसूस हो रहा था—एक ओर दर्द से कराहती रवीता और दूसरी ओर रास्ते की कठिनाई से जूझते परिजन।

कच्चे रास्ते से छोटी उमर गांव तक निजी जीप खड़ी थी और उससे आगे सांकीबारी गांव में 108 एम्बुलेंस इंतजार कर रही थी। बीच का आधा किलोमीटर ऐसा था जहां न जीप पहुंच सकती थी, न एम्बुलेंस। परिवार के लोग घबराहट और दुआओं के बीच रवीता को लेकर आगे बढ़ते रहे, लेकिन दर्द लगातार बढ़ता जा रहा था। रास्ते में लगभग आधा किलोमीटर ही पार हुआ था कि अचानक स्थिति गंभीर हो गई। रवीता ने वहीं कच्चे रास्ते पर, खुले आसमान के नीचे, झाड़ियों और पत्थरों से घिरे उस वीरान रास्ते पर बच्चे को जन्म दे दिया। उस क्षण न कोई अस्पताल था, न कोई प्रसव कक्ष—सिर्फ मां की पीड़ा, जिंदगी की जद्दोजहद और परिवार का संघर्ष। लेकिन ईश्वर की कृपा से जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ थे।

प्रसव के तुरंत बाद परिजनों ने सावधानीपूर्वक रवीता और नवजात को उठाया और छोटी उमर गांव तक ले आए। वहां से पति विकेश ने 2 हजार रुपये किराया देकर निजी जीप की मदद से रवीता को सांकीबारी गांव के पक्के रास्ते तक पहुंचाया, जहां एम्बुलेंस पहले से इंतजार कर रही थी। एम्बुलेंस से दोनों को दुग्धा गांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहाँ चिकित्सकों ने दोनों की हालत को संतोषजनक बताया। इस घटना ने एक बार फिर यह दिखा दिया कि सड़क जैसी मूलभूत सुविधा की कमी ग्रामीणों के जीवन पर कितना बड़ा प्रभाव डालती है। खेन्दा गांव से पक्की सड़क का निर्माण अब तक शुरू नहीं हुआ और इसी कारण एम्बुलेंस को सांकीबारी गांव तक पहुंचने के लिए छह किलोमीटर लंबा चक्कर लगाना पड़ा, जबकि सड़क बन जाने पर यह दूरी आधी रह जाती। इसी दिन जिले की कवांट तहसील के वजेपुर गांव में एक और अद्भुत घटना हुई। यहां एक गर्भवती महिला के गर्भ में जुड़वां बच्चे ब्रीच स्थिति में थे और प्रसव पीड़ा अचानक बढ़ गई। परिवार ने तत्काल 108 एम्बुलेंस को बुलाया। जब एम्बुलेंस के इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन (इएमटी) राकेश राठवा ने जांच की तो पता चला कि स्थिति अत्यंत जोखिमभरी है और समय बहुत कम है। एम्बुलेंस जैसे ही रास्ते में बढ़ी, महिला की पीड़ा असहनीय हो गई और प्रसव को रोका जाना संभव नहीं था। ऐसे में इएमटी राकेश और पायलट मनीष राठवा ने अपनी पूरी ट्रेनिंग, साहस और उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए एम्बुलेंस में ही प्रसव कराने का निर्णय लिया। यह क्षण तनाव, जोखिम और उम्मीद का मिला-जुला रूप था। ब्रीच स्थिति में बच्चों का जन्म करवाना अनुभवी डॉक्टर के लिए भी चुनौतीभरा होता है, लेकिन अहमदाबाद के विशेषज्ञ चिकित्सक रमणिकभाई के फोन मार्गदर्शन और स्टाफ की दक्षता के चलते एम्बुलेंस चलती सड़क पर ही प्रसव कक्ष में बदल गई। कुछ ही समय में जुड़वां नवजात सुरक्षित जन्म ले चुके थे। मां और दोनों बच्चों को प्राथमिक उपचार दिया गया और स्थिति स्थिर होने के बाद उन्हें पनावड गांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। इन दोनों घटनाओं ने एक ही दिन में यह संदेश दे दिया कि जीवन कभी भी, कहीं भी शुरू हो सकता है और कभी भी संकट में घिर सकता है। जहां कच्चे रास्तों की कमी एक मां को खुले मैदान में बच्चे को जन्म देने को मजबूर कर देती है, वहीं दूसरी ओर एम्बुलेंस कर्मियों की तत्परता और कौशल जीवन के लिए एक नई उम्मीद बन जाती है। छोटा उदेपुर की यह कहानी बताती है कि ग्रामीण भारत अब भी बुनियादी सुविधाओं का इंतजार कर रहा है, लेकिन इंसानियत, साहस और सेवा की भावना आज भी हर कठिनाई से बड़ी है।

भारत–इजराइल मुक्त व्यापार समझौते की नई राह: दो चरणों में लागू करने की तैयारी, व्यापार को जल्द मिलेगी गति

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और इजराइल के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को लेकर लंबे समय से चल रही बातचीत अब एक नए मोड़ पर पहुंच गई है। दोनों देश चाहते हैं कि कारोबारी जगत को जल्द से जल्द लाभ मिले, और इसी सोच के कारण इसे दो चरणों में लागू करने का प्रस्ताव सामने आया है। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने रविवार को यह संकेत दिया कि एफटीए के पहले चरण को जल्दी पूरा कर प्रभावी बनाया जा सकता है, ताकि दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश को त्वरित प्रोत्साहन मिल सके। पिछले गुरुवार को भारत और इजराइल ने इस एफटीए के लिए औपचारिक बातचीत शुरू करने के लिए आवश्यक नियमों (टीओआर) पर हस्ताक्षर किए। इन नियमों में माल के लिए बेहतर बाजार तक पहुंच, कस्टम शुल्कों में कमी, व्यापारिक बाधाओं को हटाने, निवेश को सरल बनाने, कस्टम प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी बनाने और सेवाओं के क्षेत्र में कई प्रकार की ढील शामिल है। दोनों देशों की यह कोशिश है कि आधुनिक तकनीक, नवाचार और शोध के माध्यम से एक-दूसरे की विशेषज्ञता से लाभ उठाते हुए आने वाले दशक में व्यापारिक साझेदारी को नई ऊंचाई तक ले जाया जाए। पीयूष गोयल इन दिनों भारत के 60 सदस्यीय व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल के साथ इजराइल के दौरे पर हैं। यहां दोनों देशों की उद्योग जगत से जुड़े प्रतिनिधियों के बीच लगातार बैठकों का दौर जारी है। बातचीत में एक महत्वपूर्ण निर्णय यह भी हुआ कि जो मुद्दे अत्यधिक संवेदनशील हैं, उन्हें फिलहाल चर्चा से अलग रखा जाएगा, ताकि एफटीए की प्रक्रिया में अनावश्यक देरी न हो। विशेषज्ञों का मानना है कि यह रणनीति भारत और इजराइल दोनों के लिए फायदेमंद होगी, क्योंकि यह समझौता यदि चरणबद्ध लागू होता है तो शुरुआती वर्षों में कई व्यापारिक क्षेत्रों को तुरंत राहत और गति मिल सकती है। दोनों देशों का मकसद केवल व्यापार बढ़ाना ही नहीं, बल्कि संयुक्त परियोजनाओं के माध्यम से नई तकनीकों को विकसित करना और निवेश के चैनलों को मजबूत करना भी है। भारत की विशाल उपभोक्ता शक्ति और इजराइल की अत्याधुनिक तकनीकें – दोनों मिलकर एक ऐसा आर्थिक मॉडल तैयार कर सकती हैं, जिससे कृषि, रक्षा, साइबर सुरक्षा, मेडिकल टेक्नोलॉजी और जल संरक्षण जैसे क्षेत्रों में तेज़ी से विकास की नई संभावनाएं खुलेंगी। सितंबर 2025 के व्यापारिक आंकड़े बताते हैं कि भारत ने इजराइल को 178 मिलियन डॉलर का निर्यात किया, जबकि वहां से 121 मिलियन डॉलर का आयात किया। यह 56.8 मिलियन डॉलर का सकारात्मक व्यापार संतुलन दर्शाता है। हालांकि पिछले वर्ष की तुलना में निर्यात में 5.19% और आयात में 20% की गिरावट दर्ज की गई, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि एफटीए के लागू होने के बाद व्यापारिक निर्बाधता बढ़ेगी और ये उतार-चढ़ाव स्थिरता में बदल जाएंगे। भारत–इजराइल संबंध अब सिर्फ कूटनीति या रक्षा तक सीमित नहीं रह गए हैं। नए एफटीए की दिशा में उठाए गए कदम दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को गहराई देंगे और यह साझेदारी आने वाले वर्षों में एशिया और पश्चिम एशिया के व्यापारिक परिदृश्य को भी नए तरीके से परिभाषित कर सकती है। अब निगाहें इस बात पर हैं कि बातचीत आगे किस गति से बढ़ती है और पहला चरण कब तक लागू हो पाता है। लेकिन इतना तय है कि यह समझौता दोनों देशों के व्यापार, तकनीक, अनुसंधान और निवेश को एक नई रफ्तार देने जा रहा है, जिसकी आहट पहले से ही महसूस की जाने लगी है।

बारह हज़ार की नौकरी, लेकिन नाम पर 124 फर्में: ओटीपी से पहचान चोरी का सनसनीखेज़ मामला उजागर

(जीएनएस)। मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश में कर चोरी से जुड़े एक बड़े फर्जीवाड़े ने सबको चौंका दिया है। राज्य कर विभाग की शिकायत पर शुरू हुई जांच में पता चला कि लखनऊ का एक साधारण युवक, जो महज़ बारह हज़ार रुपये महीने की नौकरी करता है, उसके नाम पर न सिर्फ एक-दो, बल्कि पूरे 124 फर्मों का रजिस्ट्रेशन किया गया है। इन फर्मों के जरिये करोड़ों rupees के टैक्स फ्रॉड की आशंका जताई गई है। लेकिन सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि जिसे इस घोटाले का मास्टरमाइंड माना जा रहा था, वह युवक खुद इन कंपनियों के अस्तित्व से पूरी तरह अनजान था। लखनऊ में रहने वाले अंकित कुमार को इस पूरे मामले की जानकारी तब हुई जब मुरादाबाद पुलिस का फोन आया। शुरुआत में उन्हें लगा कि शायद कोई साधारण पूछताछ होगी, लेकिन जैसे ही पुलिस ने बताया कि उनके मोबाइल नंबर और दस्तावेजों का इस्तेमाल कर 124 फर्में रजिस्टर्ड की गई हैं, तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। अंकित बताते हैं कि वे बेहद साधारण आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। बारह हज़ार की नौकरी करने वाला व्यक्ति इतना बड़ा नेटवर्क कैसे खड़ा कर सकता है, इसकी कल्पना भी संभव नहीं। पुलिस को बयान देते समय भी वे बार-बार यही कहते रहे कि यह पूरा मामला identity theft का है और वे खुद एक अनजाने खेल का हिस्सा बन गए।

अंकित ने पुलिस को बताया कि कुछ महीने पहले उनके चाचा के निधन के बाद उन्हें पैसों की आवश्यकता पड़ी थी और उन्होंने एक लोन के लिए आवेदन किया था। उसी दौरान कुछ एजेंटों ने आधार वेरीफिकेशन के नाम पर उनसे ओटीपी मांगा। अंकित को यह आभास नहीं था कि इसी ओटीपी के जरिए कोई उनके दस्तावेजों की पूरी जानकारी तक पहुंच सकता है। उन्होंने निसंकोच ओटीपी दे दिया, लेकिन न तो उन्हें लोन मिला और न कोई फोन आया कि आवेदन अस्वीकृत हो गया है। उन्हें लगा कि बात खत्म हो गई, लेकिन वही ओटीपी किसी संगठित नेटवर्क के लिए एक रास्ता बन गया जिसके सहारे उनके नाम पर कंपनियों का एक पूरा जाल बुना गया। 124 फर्मों के नाम सामने आने के बाद जब उन्होंने पुलिस से बातचीत की तो पुलिस ने भी माना कि उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे इतने बड़े फर्जीवाड़े का हिस्सा हों। जांच में यह भी सामने आया कि फर्जी रजिस्ट्रेशन कर इन कंपनियों का उपयोग करोड़ों रुपये की टैक्स चोरी के लिए किया जा रहा था। राज्य कर विभाग ने मामले की गंभीरता देखते हुए तुरंत एफआईआर दर्ज कराई और पुलिस को जांच में लगाया। धीरे-धीरे पूरे नेटवर्क की परतें खुलने लगीं और वास्तविक अपराधी पुलिस की गिरफ्त में आ गए। अंकित को पुलिस की ओर से राहत देते हुए यह बताया गया कि उनका रोल केवल identity theft का शिकार होने तक ही सीमित है।

अंकित का कहना है कि जब उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि किसी ने उनके सरल स्वभाव और भरोसे का फायदा उठाकर इतना बड़ा खेल रचा है, तो वे स्तब्ध रह गए। उन्होंने मुरादाबाद पुलिस टीम और वरिष्ठ अधिकारियों का आभार जताते हुए कहा कि अगर समय पर उनकी पहचान की पुष्टि न होती और वे अपना पक्ष स्पष्ट न कर पाते, तो शायद उनकी जिंदगी पर एक ऐसा आरोप चिपक जाता जिसे मिटाना मुश्किल हो जाता। अब उम्मीद है कि उन्हें इस पूरे मामले में पूरी तरह क्लीन चिट मिल जाएगी।

यह घटना डिजिटल फ्रॉड के बढ़ते खतरों की ओर एक बार फिर इशारा करती है। केवल एक ओटीपी, जिसे लोग अक्सर सामान्य संदेश समझकर साझा कर देते हैं, किस तरह किसी की जिंदगी को उलझा सकता है, इसका यह उदाहरण बेहद डराने वाला है। जांच एजेंसियाँ अब इस बात की पड़ताल कर रही हैं कि किस तरह इतने बड़े पैमाने पर फर्जी कंपनियों का रजिस्ट्रेशन किया गया और इस नेटवर्क में कितने लोग शामिल थे। लेकिन फिलहाल बारह हज़ार की नौकरी करने वाले अंकित कुमार के लिए यह राहत की बात है कि सच सामने आ रहा है और वे एक बड़े अपराध के झूठे बोझ से मुक्त होने की ओर बढ़ रहे हैं।

...यह बात ध्यान में आते ही मुख्यमंत्री ने संवेदनशीलता दिखाकर तुरंत ही कार्यक्रम का स्थल बदला !

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का मानवतावादी दृष्टिकोण

▸▸ एक बेटी का विवाह पूर्व निर्धारित समय तथा स्थल पर आयोजित हो; इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जामनगर के कार्यक्रम का स्थल बदला

▸▸ "हमारे कार्यक्रम का स्थल बदलो, बेटी के परिवार की चिंता हमारी चिंता" : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ "विवाह के मौसम में तत्काल नया स्थल खोजना, मेहमानों को सूचित करना, नई व्यवस्थाएँ करना; ये सब हमारे लिए मुश्किल था, परंतु मुख्यमंत्री साहब का एक फोन आया और उस रात हम शांति से सो सके" : श्री ब्रिजेश परमार, बेटी के काका

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मानवतावादी दृष्टिकोण को दर्शाने वाली घटना प्रकाश में आई है। हुआ हूँ कि मुख्यमंत्री ने जामनगर के एक परिवार की विनती को सम्मान देकर अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम का स्थल बदल दिया, जिससे एक बेटी के विवाह का प्रसंग धूमधाम से और शांतिपूर्वक संपन्न हो सके। बात विस्तार से। तारीख 23-11-2025 के दिन जामनगर के परमार परिवार की बेटी श्री संजना परमार का विवाह शहर के टाउन हॉल में होना निर्धारित हुआ था। परिवार में शुभ अवसर था, खुशियाँ समा नहीं रही थीं, सभी विधियाँ और तैयारियाँ पूर्णता की ओर थीं। तभी समाचार मिला कि ता. 24-11-2025 के दिन राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जामनगर पधारने वाले हैं। जामनगर के टाउन हॉल में मुख्यमंत्री का सार्वजनिक कार्यक्रम निर्धारित हुआ था। यह कार्यक्रम श्री संजना परमार के विवाह के ठीक एक दिन बाद होने के कारण आसपास के क्षेत्र में पुलिस बंदोबस्त तथा सुरक्षा व्यवस्थाएँ की गई थीं। मुख्यमंत्री की सुरक्षा व्यवस्था के कारण विवाह समारोह में अवरोध उत्पन्न होने की आशंका थी, जिसके चलते परमार परिवार की चिंता बढ़ गई।

परिवार ने इस मुद्दे पर मुख्यमंत्री तक अपनी बात पहुँचाने का प्रयास किया। बात मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुँची। बात सुनकर मुख्यमंत्री ने तुरंत कहा, "हमारे कार्यक्रम का स्थल बदलो। बेटी के परिवार की चिंता हमारी चिंता।" मुख्यमंत्री के आदेश के चलते कार्यक्रम का स्थल बदला गया।

इस घटनाक्रम के विषय में बात करते हुए श्री संजना परमार के काका श्री ब्रिजेश परमार कहते हैं, "मुख्यमंत्री ने हमारे विवाह प्रसंग की जानकारी मिलते ही हमसे बातचीत की और आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने कहा, 'आप जरा भी चिंता मत करना। आपका विवाह प्रसंग जहाँ निर्धारित था, उसी टाउन हॉल में धूमधाम से ही कीजिए। हम हमारे कार्यक्रम का स्थल बदल देंगे।'" इस प्रकार मुख्यमंत्री की इस संवेदना से परमार परिवार की चिंता दूर हुई।

ब्रिजेश परमार मुख्यमंत्री का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं : "विवाह के मौसम में तत्काल नया स्थल खोजना, मेहमानों को सूचित करना, नई व्यवस्थाएँ करना; ये सब हमारे लिए मुश्किल था, परंतु आभार मुख्यमंत्री का, जिन्होंने हमारा प्रसंग शांति एवं सुखपूर्वक आयोजित हो; इसके लिए अपने कार्यक्रम का स्थल बदला। मुख्यमंत्री साहब का एक फोन आया और उस रात हम शांति से सो सके।" यह घटना दर्शाती है कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मृदु एवं दृढ़ मुख्यमंत्री तो हैं ही, साथ ही 'उत्तम इंसान' भी हैं। वे जनता की छोटी से छोटी मुश्किलों के लिए भी सदा संवेदनशील हैं।

भारत के डिजिटल साम्राज्य में नई ईंट: गौतम अडानी ने ट्रेड कैसल टेक पार्क खरीदा, अडानीकॉनेक्स बना डेटा क्रांति का अगला ध्रुव

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत के उभरते डिजिटल ढांचे और डेटा इकोनॉमी में आज एक और ऐतिहासिक कदम दर्ज हो गया, जब गौतम अडानी के नेतृत्व वाले अडानी ग्रुप ने अपने डेटा सेंटर साम्राज्य को और बड़ा करते हुए ट्रेड कैसल टेक पार्क प्राइवेट लिमिटेड (TCTPPL) का अधिग्रहण कर लिया। अडानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड और वैश्विक डेटा सेंटर ऑपरेटर EdgeConneX के संयुक्त उपक्रम अडानीकॉनेक्स ने इस कंपनी की 100 प्रतिशत हिस्सेदारी 231.34 करोड़ रुपये में खरीदकर संकेत दे दिया है कि आने वाले दशक में भारत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में वैश्विक शक्तियों के बराबर खड़ा होगा। सौदे को अंतिम रूप देने के लिए 21 नवंबर 2025 को ट्रेड कैसल टेक पार्क और उसके शेयरधारकों–श्री नामन डेवलपर्स और जयेश शाह–के साथ शेयर खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

इस अधिग्रहण का महत्व सिर्फ एक जमीन खरीदने या किसी निष्क्रिय कंपनी को अपने हाथ में लेने भर का नहीं है, बल्कि मुंबई जैसी तेज़ी से बदलती महानगरीय अर्थव्यवस्था में अडानीकॉनेक्स के दीर्घकालिक निवेश का संकेत है। कंपनी ने बताया कि टीसीटीपीपीएल के पास बड़ी भूमि जोत होने के साथ-साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण के लिए आवश्यक लगभग सभी प्रमुख लाइसेंस पहले से मौजूद हैं। भले ही कंपनी ने अब तक कोई व्यावसायिक गतिविधि शुरू नहीं की थी, लेकिन उसके नाम पर मौजूद जमीन और लाइसेंस अडानीकॉनेक्स को अगले चरण की डेटा सेंटर परियोजनाओं में तेज शुरुआत देंगे। डेटा सेंटर उद्योग में शुरुआती लाइसेंसिंग और भूमि अधिग्रहण की जटिल और समय लेने वाली प्रक्रिया को देखते हुए यह सौदा अडानी समूह के लिए एक रणनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है।

अडानीकॉनेक्स की महत्वाकांक्षाएँ पिछले पांच वर्षों में लगातार बड़ी हुई हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में इंटरनेट उपयोग, क्लाउड तकनीक, एआई एप्लिकेशन और 5G विस्तार के साथ जैसे-जैसे डेटा की मांग तेजी से बढ़ी है, वैसे-वैसे कंपनी ने देशभर में अपनी उपस्थिति को मजबूती दी है। अडानी और EdgeConneX का यह ज्वाइंट वेंचर अगले दशक में 1 गीगावाट डेटा सेंटर क्षमता विकसित करने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में कंपनी चेन्नई, नोएडा, नवी मुंबई, पुणे और हैदराबाद जैसे प्रमुख डिजिटल हब में डेटा सेंटर का संचालन कर रही है और लगातार नई परियोजनाओं पर काम कर रही है। तेज़ी से बढ़ते डिजिटल भारत में यह क्षमता आने वाले वर्षों में कई गुना बढ़ने वाली है।

पिछले महीने अडानीकॉनेक्स और गूगल द्वारा की गई ऐतिहासिक साझेदारी ने इस उद्योग की तस्वीर को और स्पष्ट कर दिया था। विशाखापत्तनम में बनने वाला भारत का सबसे बड़ा एआई डेटा सेंटर कैंपस–जिसे "न्यू ग्रीव एनर्जी इंफ्रा" का रूप देने की योजना है–आने वाले समय में देश की तकनीकी ऊर्जा का नया केंद्र बनने जा रहा है। गूगल ने घोषणा की है कि 2026 से 2030 के बीच वह लगभग 15 बिलियन अमेरिकी डॉलर का भारी निवेश करेगा। यह निवेश केवल डेटा सेंटर नहीं, बल्कि गहरे समुद्र में बिछने वाले सबसी केबल नेटवर्क, क्लीन एनर्जी आधारित एआई वर्कलोड, और डिजिटल कनेक्टिविटी के एक बिल्कुल नए युग की नींव डालने वाला है।

गौतम अडानी ने इस साझेदारी को भारत के डिजिटल परिवर्तन की सबसे बड़ी छलांगों में से एक बताया था, और आज ट्रेड कैसल टेक पार्क का अधिग्रहण उसी यात्रा की निरंतरता है। अडानी के अनुसार भारत अब सिर्फ डिजिटल सेवाओं का उपभोक्ता नहीं, बल्कि दुनिया के सबसे मजबूत डेटा इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माता बनने जा रहा है। उन्होंने कहा था कि आने वाले दशक में भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होगी, और यह निवेश उस भविष्य को आकार देने वाला कदम है। विशाखापत्तनम में बनने वाले मेगा एआई कैंपस और मुंबई में अधिग्रहीत नई भूमि परियोजना के साथ, अडानीकॉनेक्स अब ऐसे इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर रहा है जिसे अगले 30 वर्षों तक भारत की तकनीकी जरूरतों का आधार माना जाएगा। यह विस्तार न केवल करोड़ों भारतीयों की डिजिटल सेवाओं को मजबूत करेगा, बल्कि भारत को वैश्विक डेटा इकोसिस्टम में एक निर्णायक भूमिका देगा।

इस सौदे के साथ अडानी समूह ने फिर यह साबित कर दिया है कि भारतीय कॉरपोरेट जगत में डिजिटल और तकनीकी निवेश अब सिर्फ व्यापार नहीं, बल्कि देश के विकास की रणनीतिक धुरी बन गए हैं। मुंबई का यह अधिग्रहण भविष्य के भारत के लिए उस आधारशिला जैसा है, जिस पर आने वाले समय की एआई, डेटा और क्लाउड अर्थव्यवस्था खड़ी होगी।